मंत्र·तंत्र·यंत्र
वि ज्ञा न

दुर्लभ महत्वपूर्ण सामग्री

साधकों की सुविधा के लिए अत्यन्त रियायत के साथ

साधकों का आग्रह रहा है, कि वे साधनाएं तो करना चाहते है पर यदि उन्हें कुछ विशिष्ट साधना सामग्री में रियायत दी जाय तो वे सुविधापूर्वक साधना सम्पन्न कर सके।

पत्रिका सदस्य के लिए कुछ विशिष्ट साधना सामग्री इस बार रियायत के साथ दी जा रही है, पर यह छूट केवल उन्हीं सदस्यों को प्राप्त हो सकेगी जो पत्रिका सदस्य है, और जिसकी धनराशि ३० अगस्त तक कार्यालय में पहुंच जायेगी।

सामग्री का नाम—	वास्तविक मूल्य	रियायती मूल्य
१- श्वेतार्क गणपति	३००)रू.	६०)रू.
२- गौरी शंकर रूद्राक्ष	८०)रू.	१५)रू.
३- लघु नारियल	६०)रू.	१०)रू.
४- नर्मदेश्वर शिवलिंग	१२०)रू.	३०)रू.
५- बिल्ली की नाल	१२०)रू.	३०)रू.
६- सियार सिंगी	१२०)रू.	३०)रू.
७- सिद्धि फल	८०)रू.	१०)रु.
८- नवग्रह यंत्र	१२०)रु.	१५)रु.
९- गोमती चक्र	३०)रु.	५)रु.
१०- कार्य सिद्धि यंत्र	१२०)रु.	३०)रू.
११- हनुमान यंत्र	६०)रु.	५)रु.
१२- कार्य सिद्धि मुद्रिका	१५०)रु.	१५)रु.

सामग्री के लिए रियायती मूल्य अग्रिम आना आवश्यक है, जो सामग्री चाहे वे साफ साफ मनीआर्डर पर या पत्र में लिखी हुई हों, यह रियायती छूट केवल पत्रिका सदस्यों के लिए ही है।

ऐसी छूट केवल पत्रिका ही अपने सदस्यों को दे सकती है।

वर्ष–८

अंक–८

अगस्त-१९८९

※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※

मुद्रक प्रकाशक लेखक

एवं

सम्पादक

योगेन्द्र निर्मोही

सम्पर्क—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग

हाईकोर्ट कोलोनी,

जोधपुर–३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : २२२०९

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

साधकः सर्वदेवानां अप्सरा किन्नर प्रते ।
धन धान्य यश लक्ष्मी कीर्तिर्मृद्धि ददामि ते ।।

हम समस्त देवताओं की साधना के साथ साथ अप्सराओं और किन्नरियों की साधना कर उन्हें भी सिद्ध करें, जिससे हमारे घर में धन धान्य यश लक्ष्मी कीर्ति तथा समृद्धि निरन्तर प्राप्त होती रहे ।

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी, जोधपुर–३४२००१ (राजस्थान)

मृगाक्षी नेत्रा अप्सरा प्रयोग

अप्सराओं के दो वर्ग है, एक वर्ग में तो वे अप्सराएं आती है; जिनकी साधना पुरूष करते है, और उन्हें प्रसन्न कर अपने अनुकूल बना कर उनसे धन, द्रव्य, यश सौभाग्य एवं सुख प्राप्त करते है।

दूसरे प्रकार की "सुरति प्रिया अप्सराएं" होती है, जो स्वयं मृत्यु लोक के प्राणियों से संसर्ग सम्पर्क, साहचर्य चाहती है। वे खुद इसके लिए प्रयत्नशील होती है, कोई साधक थोड़ी सी भी साधना करे, और हम उसके सम्पर्क में उपस्थित हो, इससे साधक को सुविधा मिल जाती है और उसको साधना शीघ्र सिद्ध हो जाती है।

मृगाक्षी नेत्रा अप्सरा ऐसी ही सुरति प्रिया अप्सरा है, जिसकी सही तरीके से यदि कम साधना भी सम्पन्न की जाय तो साधना में सिद्धि मिल जाती है, और अप्सरा सिद्ध हो जाती है।

पिछले आठ वर्षों के पत्रिका प्रकाशन में इस प्रकार की सुरति प्रिया अप्सरा साधना का तांत्रोक्त विवरण पहली बार पत्रिका पाठकों के लिए प्रस्तुत है, जिससे कि वे इसका लाभ उठा कर इस अप्सरा को सिद्ध कर सके।

अप्सरा सिद्धि करना किसी भी दृष्टि से अमान्य और अनैतिक नहीं है, उच्चकोटि के योगियों, सन्यासियों, ऋषियों और देवताओं तक ने इन अप्सराओं और किन्नरियों की साधना की है, यों तो 'मन्त्र महोदधि' आदि अन्य तांत्रिक ग्रन्थों में १०८ विभिन्न अप्सराओं की प्रामाणिक साधनाएं दी हुई हैं, और उनमें से कई अप्सराओं की साधनाएं साधकों ने सिद्ध की है, और उसका लाभ उठाया है।

पर हमें "सुरति प्रिया" वर्ग की अप्सरा साधना का प्रामाणिक विवरण प्राप्त नहीं हो पा रहा था, इस बार संयोग से सोलन शिविर से पहले शिमला के पास एक चैल नाम का स्थान है, जो कि प्रकृति की दृष्टि से अत्यंत रमणीय और प्रसिद्ध स्थान है, जिसे महाराजा पटियाला ने बसाया था।

जब हम चैल के प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द ले रहे थे, तभी हमारी वहां पर एक गृहस्थ सन्यासी से भेंट हो

गई, 'गृहस्थ सन्यासी' शब्द मैं इस लिए प्रयोग कर रहा हूँ, कि वे सही अर्थों में तो हिमाचल में रहने वाले गृहस्थ ही हैं, जिनके एक पत्नी और तीन संतान है, परन्तु यदि मूल रूप से देखा जाय तो वे सन्यासी हैं, उनका सारा जीवन तांत्रिक साधनाओं में ही व्यतीत हुआ, और तन्त्र के क्षेत्र में वे अद्वितीय सिद्ध योगी हैं, उनका नाम सौन्दर्यानन्द जी है।

हमारी जिज्ञासा बढ़ी, हमने इनका नाम तो पहले भी सुन रखा था, और हमें यह ज्ञात था, कि अप्सरा साधनाओं में ये सिद्धहस्त आचार्य हैं, तथा इन्होंने लगभग सभी की सभी अप्सराओं की साधनाएं सम्पन्न की है, हमारी जिज्ञासा यह थी कि यदि हमें इनके द्वारा सुरति प्रिया अप्सरा साधना की जानकारी और साधना रहस्य ज्ञात हो जाय तो यह काफी महत्वपूर्ण कार्य होगा।

मैंने उनसे इस सम्बन्ध में निवेदन किया, तो उन्होंने कहा मैं एक जगह टिक कर बैठता नहीं, गृहस्थ अवश्य हूं परन्तु नहीं के बराबर गृहस्थ हूं।

फिर चर्चा गुरूदेव के बारे में चली तो उनके साथ व्यतीत किये हुए दिन याद हो आये, उन्होंने बताया कि मैं लगभग एक वर्ष से भी ज्यादा उनके साथ रोहतांग के पास रहा था, और उनसे काफी कुछ साधनाएं मुझे प्राप्त हुई थी।

पर इसके बाद मेरा रुझान अप्सरा साधना की ओर बढ़ गया, और मैंने अपने जीवन में यह निश्चय किया कि सभी साधनाओं को परख लूं और सभी साधनाएं संपन्न कर लूं, और मुझे इसमें पूरी कामयाबी मिली, लगभग सभी अप्सराओं को मैंने सिद्ध किया है, यद्यपि उन सब की क्रिया, उन सब को सिद्ध करने का तरीका अपने आप में अलग हैं, और गोपनीय है, यदि 'मंत्र महार्णव' आदि ग्रन्थों में प्रकाशित साधनाओं के आधार पर इन्हें सिद्ध किया जाय तो सफलता नहीं मिल पाती।

मैंने परिश्रम कर कई सन्यासियों से और इस क्षेत्र के श्रेष्ठ योगियों से मिल कर इन साधनाओं को सीखा है, सिद्ध किया है, उन्हें प्रत्यक्ष किया है, और अब मैं इससे संबंधित ग्रन्थ लिख रहा हूं, यदि साधकों का सौभाग्य होगा तो यह ग्रन्थ प्रकाशित भी होगा।

अप्सरा साधना सिद्ध करने से व्यक्ति निश्चिन्त और प्रसन्न चित्त बना रहता है, उसे अपने जीवन में मानसिक तनाव व्याप्त नहीं होता, अप्सरा के माध्यम से उसे मन चाहा स्वर्ण, द्रव्य, वस्त्र, आभूषण और अन्य भौतिक पदार्थ उपलब्ध होते रहते है, यही नहीं अपितु सिद्ध करने पर अप्सरा साधक के पूर्णतः वशवर्ती हो जाती है, और साधक जो भी आज्ञा देता है, उस आज्ञा का वह तत्परता के साथ पालन करती है।

साधक के चाहने पर वह सशरीर उपस्थित होती है, यों सूक्ष्म रूप से साधक की आंखों के सामने वह हमेशा बनी रहती है, **इस प्रकार सिद्ध की हुई अप्सरा "प्रिया" रूप में ही साधक के साथ रहती है।**

जब हमने सुरति प्रिया अप्सरा साधना रहस्य के बारे में जिज्ञासा प्रगट की, तो वे एक क्षण के लिए चौंके, पर जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि हम गुरूदेव के दीक्षित शिष्य हैं, तो उन्होंने 'मृगाक्षी अप्सरा साधना रहस्य' स्पष्ट कर दिया, जो कि अभी तक सर्वथा गोपनीय रहा है, मृगाक्षी का तात्पर्य मृग के समान भोली और सुन्दर आंखों वाली अप्सरा से है, जो सुन्दर, आकर्षक, मनोहर, चिर यौवनवती और प्रसन्न चित्त अप्सरा है, जो निरन्तर साधक का हित चिन्तन करती रहती है, जिसके शरीर से निरन्तर पद्म गंध प्रवहित होती रहती है, और जो एक बार सिद्ध होने पर जीवन भर साधक के वश में बनी रहती है।

स्वामीजी ने हमें इससे संबन्धित तांत्रिक प्रयोग स्पष्ट किया था, जो कि वास्तव में ही अचूक और महत्वपूर्ण है।

मृगाक्षी अप्सरा साधना रहस्य

किसी भी शुक्रवार की रात्रि को साधक अत्यन्त सुन्दर सुसज्जित वस्त्र पहिन कर साधना स्थल पर बैठे, इसमें किसी भी प्रकार के वस्त्र पहिने जा सकते हैं, जो सुन्दर हो, आकर्षक हो, साथ ही साथ अपने कपड़ों पर गुलाब का इत्र लगावे और कान में भी गुलाब के इत्र का फोहा लगा दें।

फिर सामने गुलाब की दो मालाएं रखें और उसमें से एक माला साधना के समय स्वयं धारण कर लें।

इसके बाद एक थाली लें, जो कि लोहे की या स्टील की न हो, फिर उस थाली में निम्न मृगाक्षी अप्सरा यंत्र का निर्माण चांदी के तार से या चांदी की सलाका से या केसर से अंकित करें।

मृगाक्षी अप्सरा यन्त्र

फिर इस पात्र में पहले से ही सिद्ध किया हुआ, 'दिव्य तेजस्वी मृगाक्षी अप्सरा महायन्त्र' को स्थापित करें, जो कि पूर्ण मंत्र सिद्ध प्राण चैतन्य और सिद्ध हो, इस यन्त्र के चार कोनों पर चार बिन्दियां लगावे और पात्र के चारों ओर चार घी के दीपक लगावे, दीपक में जो घी डाला जाय, उसमें थोड़ा थोड़ा गुलाब का इत्र भी मिला दें, फिर पात्र के सामने पांचवां बड़ा सा दीपक घी का लगावे और अगरबत्ती प्रज्जवलित करें, तथा इस मन्त्र सिद्ध तेजस्वी "मृगाक्षी महायन्त्र" पर २१ गुलाब के पुष्प निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चढ़ायें।

मन्त्र

ॐ मृगाक्षी अप्सरायै वश्यं कुरु कुरु फट्

जब २१ गुलाब के पुष्प चढ़ा चुके तब प्रामाणिक और सही स्फटिक माला से निम्न मंत्र की २१ माला मंत्र जप करें, इस मंत्र जप में मुश्किल से दो घंटे लगते हैं।

गोपनीय मृगाक्षी महामन्त्र

॥ ॐ श्रृं श्रैं मृगाक्षी अप्सरायै सिद्धं वश्यं श्रैं श्रृं फट् ॥

जब २१ माला मंत्र जप हो जाय, तब वह स्फटिक माला भी अपने गले में धारण कर लें, ठीक इसी अवधि में जब मृगाक्षी अप्सरा कमरे में उपस्थित हो, (साधना करते समय कमरे में साधक के अलावा और कोई प्राणी न हो) तब सामने रखी हुई दूसरी गुलाब के पुष्प की माला उसके गले में पहिना दें, और वचन ले लें कि वह जीवन भर अमुक गोत्र के अमुक पिता के अमुक पुत्र साधक के वश में रहेगी, और जब भी मैं इस मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करूंगा तब वह उपस्थित होगी, तथा जो भी आज्ञा दूंगा उसका तत्क्षण पालन करेगी।

ऐसा करने पर मृगाक्षी अप्सरा साधक के दाहिने हाथ पर अपना दाहिना हाथ रख कर वचन देती है, तब साधक उसे कोई एक काम उसी क्षण सौंप दे, और जब वह कार्य उसी क्षण संपन्न कर ले, तब समझ लेना चाहिए कि साधना सिद्ध हो गई है।

इसके बाद साधक विश्राम करें, और जीवन में जब भी अप्सरा को सूक्ष्म या स देह बुलाना चाहे तब इस मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करें।

इसमें दिव्य तेजस्वी "मृगाक्षी अप्सरा महायंत्र" का सर्वाधिक महत्व है, पूज्य स्वामीजी ने निर्देश दिया था कि इस यंत्र को बेंचे नहीं, फलस्वरूप यह महायन्त्र हम नि.शुल्क अपने साधकों को प्रदान करेंगे।

स्वामीजी ने जिस प्रकार से इस महायंत्र को सिद्ध करने की विधि बताई थी, उस विधि में बहुत ही कम महायंत्र सिद्ध हो सके हैं, पत्रिका का कोई भी सदस्य एक नया सदस्य बना कर उसका सदस्यता शुल्क भेज कर यह महायन्त्र निःशुल्क प्राप्त कर सकता हैं, पर एक साधक केवल एक ही महायंत्र मंगावे, और जो पहले सदस्यता शुल्क भेजेगा, उसे पहले महायंत्र देने की व्यवस्था हो सकेगी, यंत्र समाप्ति पर हमें विवशता पूर्वक मना करना होगा।

वास्तव में ही यह अद्भुत अचरज भरी 'सुरति प्रिया मृगाक्षी अप्सरा' का प्रयोग पाठकों के लिए सौभाग्यदायक सिद्ध होगा, ऐसा हमें विश्वास है।

३०-९-८९ से प्रारम्भ

सिद्धेश्वरी

भगवती जगदम्बा दुर्गासाधना

(शारदीय नवरात्रि ३०-९-८९ से ८-१०-८९ तक)

इस वर्ष शारदीय नवरात्रि ३०-९-८९ से प्रारम्भ हो रही है, तांत्रिक ग्रन्थों में शारदीय नवरात्रि का विशेष महत्व है, पूरा भारतवर्ष जानता है, कि शारदीय नवरात्रि साधक के जीवन में कितना अधिक महत्व रखती है।

इस वर्ष जोधपुर में शारदीय नवरात्रि पूर्ण शास्त्रीय पद्धति से तांत्रिक चिन्तन के साथ जगदम्बा साधना सम्पन्न हो रही है, जो कि प्रत्येक साधक के लिए सौभाग्यदायक है।

शारदीय नवरात्रि

इस वर्ष नवरात्रि का सर्वाधिक महत्व है, पिछले १८४ वर्षों में ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से यह पहला अवसर है, जब पूर्ण तांत्रोक्त नवरात्रि का समावेश इन दिनों में हुआ है। **तांत्रोक्त नवरात्रि का अपने आपमें ही विशेष महत्व है, क्योंकि तांत्रिक पद्धति से सम्पन्न करने पर भगवती जगदम्बा साधक के समस्त मनोरथों को पूर्ण करती ही है और साथ ही साथ उस साधना में निश्चय ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।**

इस संबंध में सैकड़ों उदाहरण शास्त्रों में बिखरे हुए है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इस नवरात्रि का जीवन में कितना अधिक महत्व है।

१- इस वर्ष यह नवरात्रि कन्याराशिस्थ सूर्य होते हुए संचलित हो रही है, अर्थात् नवरात्रि में सूर्य कन्या राशि पर होगा, कन्या राशि का अधिपति बुध है, अतः ऐसे योग में दुर्गा साधना करने पर शीघ्र कर्म सम्पन्न होता है और साधक को पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।

कन्या-संस्थे रवौ पूजा या शुक्ला तिथिरष्टमी।
तस्यां रात्रौ पूजितेय महा-विभव-विस्तरे॥

अर्थात् जिस नवरात्रि में सूर्य कन्या राशि पर गतिशील हो, ऐसी नवरात्रि की अष्टमी की रात्रि को यदि भगवती जगदम्बा की पूजा साधना होती हैं, तो उस साधक का वैभव अत्यधिक विस्तार पाता है, और वह निश्चय ही सिद्धि प्राप्त करता है।

२- "कृत्यसार-समुच्चय" ग्रन्थ में तो बताया गया है, कि यदि आश्विन शुक्ल प्रतिपदा को नवरात्रि प्रारम्भ हो रही हो, और उस दिन संयोग से शनिवार हो तो ऐसे मुहूर्त में दुर्गा साधना करने से साधक निश्चय ही भगवती जगदम्बा के दर्शन प्राप्त करता —

आश्विन शुक्ले प्रतिपदायां शनौ वासर संस्थिते।
स सिद्धि वैभवे रत्ने प्रत्यक्ष दर्शन साधक॥

ऐसा साधक नवरात्रि में बैठने मात्र से सिद्धि तो प्राप्त करता ही है, अतुलनीय वैभव प्राप्त करने के साथ साथ यदि श्रद्धापूर्वक पूरी नवरात्रि में साधक जगदम्बा साधना सम्पन्न करें तो उसे भगवती दुर्गा के प्रत्यक्ष दर्शन भी संभव होते हैं।

३- "मार्कण्डेय-रहस्य" ग्रन्थ में स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि यदि कन्या राशि पर सूर्य हो, और आश्विन शुक्ल प्रतिपदा को हस्त नक्षत्र हो तो ऐसी नवरात्रि को "सिद्धेश्वरी नवरात्रि" कहा जाता है, जो कि जीवन की समस्त सिद्धियों को पूर्णता के साथ प्रदान करने वाली होती है।

कन्या राशि स्थिते सूर्ये प्रतिपदौ हस्त मे व च।
सिद्धेश्वरी समाख्याता दुर्लभो प्राप्यते नरः॥

अर्थात् कन्या राशि पर सूर्य गतिशील हो और शारदीय नवरात्रि की प्रतिपदा को हस्त नक्षत्र हो तो ऐसी नवरात्रि 'सिद्धेश्वरी कहलाती" है और साधक या मनुष्य को सौभाग्य से ही ऐसा अवसर प्राप्त होता है क्योंकि ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से ऐसे ग्रह संयोग दुर्लभ कहे जाते है।

तांत्रोक्त नवरात्रि

उपरोक्त शास्त्र प्रमाणों से यह स्पष्ट होता है, कि वास्तव में ही इस बार नवरात्रि अपने आप में ही महत्वपूर्ण है, दुर्लभ है, और सिद्धेश्वरी है, ऐसा अवसर प्राप्त होने के बावजूद भी यदि ऐसी नवरात्रि का उपयोग हम नहीं कर पाते तो यह हमारे जीवन का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है।

काली पुराण में तो स्पष्ट रूप से कहा है—

तांत्रोक्त नवरात्रि स्यात् गुरौ रे व च साधकः।
स सिद्ध, सफल पूर्ण दुर्लभः प्राप्यते क्षणः॥

अर्थात दुर्लभ योगों से सम्पन्न सिद्धेश्वरी नवरात्रि यदि साधक के जीवन में सौभाग्य से प्राप्त हो जाय और यदि उसे सिद्ध गुरू का सम्पर्क-साहचर्य प्राप्त हो जाय तो इससे बड़ा सौभाग्यशाली साधक हो ही नहीं सकता, क्योंकि गुरू के सानिध्य में रह कर इन दिनों में उनके द्वारा बताई हुई साधना को सम्पन्न करने पर वह सिद्ध होता है, पूर्ण रूप से सफल साधक माना जाता है, पर ऐसे क्षण तो अत्यन्त दुर्लभ होते है, जो साधक को सौभाग्य से ही प्राप्त हो सकते है।

इस बार शारदीय नवरात्रि

और यह हम समस्त साधकों का सौभाग्य है कि इस बार शारदीय रात्रि ऐसे ही महान योगों से सम्पन्न होकर हमारे सामने उपस्थित हुई है। इस नवरात्रि को लेकर पूरे भारतवर्ष में हलचल है। उच्च कोटि के योगियों और सन्यासियों में उत्साह और प्रसन्नता है, अभी से कामाक्षा मन्दिर में विशेष तैयारी प्रारम्भ हो गई है, जिससे कि इस शारदीय नवरात्रि का पूरा पूरा लाभ उठाया जा सके। हिमाचल स्थित सिद्धेश्वरी मन्दिर का नये ढंग से जीर्णोद्धार सम्पन्न हुआ है, जहां इस साधना को सम्पन्न किया जा सके। हिमालय स्थित कई प्रसिद्ध शक्तिपीठों में सन्यासी और योगी डेरा डालने लगे है, जिससे कि वे वहां इन नौ दिनों में रह कर साधना सम्पन्न कर सके, और भगवती जगदम्बा को पूर्ण रूप से सिद्ध कर सके, और यह पहला अवसर है कि जब सिद्धाश्रम में भी अत्यन्त उत्साह के साथ इस शारदीय नवरात्रि की प्रतीक्षा हो रही है, जिससे कि यह सौभाग्यशाली अवसर हाथ से जावे नहीं और इसका पूरा उपयोग हो सके।

देवी रहस्य में बताया गया है—

गुरौ सिद्धि गुरौ पूर्ण शक्ति पीठस्तथैव च।
यस्य साधक सौभाग्य पूर्णं सिद्धं न संशयः॥

अर्थात् गुरू ही सिद्धि है, गुरू ही पूर्ण है और जहां गुरू का निवास है, साधक के लिए वही शक्ति पीठ है यदि ऐसे अवसर को प्राप्त कर साधक गुरू के समीप बैठ कर साधना सम्पन्न करता है, तो निश्चय ही वह सौभाग्यशाली है, और साधना सम्पन्न करने पर वह पूर्ण सिद्ध बनता ही है, इसमें कोई संशय नहीं।

गुरू सामीप्य नवरात्रि

और वास्तव में ही हम लोगों का सौभाग्य है, कि हमें दुर्लभ शारदीय नवरात्रि का अवसर प्राप्त हुआ है, और उससे भी ज्यादा सौभाग्यशाली अवसर यह प्राप्त हुआ है कि पूज्य गुरूदेव के साहचर्य में यह दुर्लभ साधना सम्पन्न होने जा रही है, इससे ज्यादा हमारे जीवन का सौभाग्य और क्या हो सकता है।

इस बार पूज्य गुरूदेव ने अत्यन्त कृपा कर यह निश्चय किया है कि वे इस सिद्धेश्वरी नवरात्रि को पूर्ण तांत्रोक्त पद्धति से सम्पन्न करायेंगे, पहली बार नवरात्रि के दिनों में पूज्य गुरूदेव ठीक उसी प्रकार से प्रयोग और साधनाएं सम्पन्न करायेंगे जिस प्रकार से सिद्धाश्रम में सम्पन्न होती है। वही पद्धति, वही क्रम, वही मंत्र रहस्य, वही तांत्रोक्त क्रिया और वही साधक देह चैतन्य के साथ साथ साधक की जिह्वा पर सिद्धेश्वरी मन्त्र का अंकन कर उस दुर्लभ साधना को प्रारम्भ कराने जा रहे हैं, जो साधक के जीवन का स्वप्न होता है, इसके लिये साधक इन्तजार करता है कि मुझे अपने जीवन में ऐसा अवसर प्राप्त हो, जिससे कि मैं मां भगवती सिद्धेश्वरी की साधना सम्पन्न कर सकूं, और गुरू के समीप रह कर उस आनन्द को प्राप्त कर सकूं, जो वास्तव में ही दुर्लभ है।

इस बार यह नवरात्रि पर्व पूर्ण क्षमता के साथ जोधपुर में ही सम्पन्न होने जा रहा है, और पूज्य गुरूदेव ने हम समस्त शिष्यों की प्रार्थना को ध्यान में रखते हुए यह अनुमति प्रदान कर दी है, कि वे इस बार उन दुर्लभ गोपनीय रहस्यों को भी स्पष्ट करेंगे, जिसके द्वारा पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है, जिसके द्वारा जीवन का दुख, दारिद्रय और दुर्भाग्य समाप्त होता है, जिसके द्वारा सौभाग्य का सूर्य उदय होता है, और जिसके द्वारा पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।

विविध साधनाओं का समावेश

जब तांत्रोक्त ढंग से ही इस नवरात्रि में साधना सम्पन्न हो रही है, तो नवरात्रि के इन नौ दिनों में उन दुर्लभ साधनाओं का समावेश भी सम्पन्न होगा, जिससे साधक पूर्ण लाभ उठा सकेंगे, इस नवरात्रि में सिद्धेश्वरी साधना के साथ साथ जो अन्य साधनाएं सम्पन्न होगी आप उनके नाम पढ़ कर ही अनुमान लगा सकेंगे, कि ये साधनाएं कितना महत्वपूर्ण, दुर्लभ और अद्वितीय है।

जिन साधनाओं का समावेश शास्त्रीय पद्धति से इन नौ दिनों में सम्पन्न होगी, वे है- १) सिद्धेश्वरी साधना, २) दुर्गा साधना ३) पीताम्बरा साधना, ४) चण्डी साधना, ५) काली साधना, ६) तारा साधना, ७) सिद्ध लक्ष्मी साधना, ८) ललिता साधना, ९) दस महाविद्या साधना १०) शत्रु स्तम्भिनी साधना, और ११) भगवती सुमुखी मातंगी साधना, १२) दिव्य अप्सरा साधना।

वास्तव में ही इस नवरात्रि पर्व का प्रत्येक दिन अपने आपमें महत्वपूर्ण है, आप स्वयं अनुमान लगा सकते है, कि नवरात्रि का प्रत्येक दिन अपनी एक नवीनता लिए हुए है, प्रत्येक दिन ऐसी साधना सम्पन्न हो रही है, जिससे इस नवरात्रि का पूरा पूरा आनन्द प्राप्त हो सके, और साधना में सिद्धि प्राप्त हो सके।

और फिर आप कल्पना करें, कि पूरे साल भर में ये ही तो दिन होते है जब हम पूर्ण साधक ऋषितुल्य बन कर साधना में बैठते है, गुरू सामीप्य साहचर्य प्राप्त करते है, जो अन्यत्र दुर्लभ है, जिसका प्रत्येक शब्द हमारे जीवन की विशेषताओं को उजागर करने वाला है।

सिद्धेश्वरी-सामग्री

अत्यन्त परमदुर्लभ सिद्धेश्वरी साधना के लिए **"द्वादश सिद्धियुक्त सिद्धेश्वरी महायंत्र"** भाग लेने वाले साधकों को सर्वथा निःशुल्क देने के साथ साथ परम दुर्लभ **सिद्धेश्वरी चित्र और सिद्धेश्वरी माला** देने की व्यवस्था रखी है, और व्यवस्था रखी है, **सिद्धेश्वरी साधना पुस्तक** की जिसमें सिद्धेश्वरी साधना का पूर्ण प्रामाणिक विवरण उपलब्ध है। यह सारी सामग्री साधकों को

सिद्धेश्वरी

निशुल्क प्रदान की जा रही है, जो कि पूर्ण रूप से मंत्र सिद्ध प्राण चैतन्य और सिद्ध है, इसके साथ ही साथ साधना के प्रथम दिन साधक की जिह्वा पर सिद्धेश्वरी यंत्र प्रामाणिकता के साथ अंकित किया जायेगा, जो कि अपने आप में महत्वपूर्ण विधान है, साथ ही साथ नित्य की तरह उत्तम पवित्र भोजन, आवास आदि की सुविधाएं भी साधक को प्रदान की जा रही है, इन सारे यंत्रों चित्रों, आवास भोजन आदि से संबंधित साधकों के लिए शुल्क मात्र ६००/रू. रखा है, यदि देखा जाय तो ये यंत्र ही अपने आप में इससे ज्यादा महत्वपूर्ण और मूल्यवान है, जो पूरे जीवन भर के लिए उपयोगी रहेंगे।

भाग लेने वाले साधकों को चाहिए कि वे इस पत्रिका के अंतिम पृष्ठों में संलग्न प्रपत्र भर कर हमें भेज दें, जिससे कि उनका स्थान निश्चित रूप से निर्धारित हो सके, **यह शिष्य वर्ष है, यह साधक वर्ष है, यह सिद्धेश्वरी वर्ष है, और इस बार पत्रिका पाठकों को इस शिविर में भाग लेना ही है, हम सभी पलक पावड़े बिछाये आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।**

महामृत्युञ्जय-विधान

" महामृत्युञ्जय-विधान " मन्त्रशास्त्र में क्रांतिकारी मन्त्र तथा आश्चर्य-जनक फलदायक प्रयोग है, बीमारियों, शिशुरोगों तथा बालघात जैसे रोगों से निराकरण पाने व पूर्ण आयु प्राप्त करने के लिए यह श्रेष्ठतम अनुष्ठान है।

भारत में ही नहीं, विदेशों में भी " महामृत्युञ्जय " की चर्चा रही है, प्रत्येक बालक रोगी या अकाल मृत्यु से भीत व्यक्ति को इस प्रकार का मन्त्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त " महामृत्युञ्जय यन्त्र " धारण कर लेना चाहिए।

साधकों के लाभार्थ यह गोपनीय विधान आगे के पन्नों पर प्रस्तुत है—

महामृत्युञ्जय विधान या अनुष्ठान अत्यन्त ही महत्वपूर्ण और श्रेष्ठतम प्रयोग कहा गया है, इस अनुष्ठान में अकाल मृत्यु को समाप्त करने का श्रेष्ठ भाव है और जिस व्यक्ति के जीवन में अकाल मृत्यु या बाल-घात योग हो, उसके लिये महामृत्युन्जय विधान सर्वश्रेष्ठ है।

महामृत्युञ्जय अपने आप में अत्यन्त ही श्रेष्ठ और प्रभावयुक्त है, तथा उच्च स्तर के साधकों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि यह मन्त्र अपने आप में महत्वपूर्ण और काल पर विजय प्राप्त करने में सक्षम है।

नीचे मैं इस अनुष्ठान से सम्बिन्धित विधि प्रस्तुत कर रहा हूं जिससे कि पाठक इससे लाभ उठा सकें।

अनुष्ठान में कुछ तथ्यों का ध्यान रखना आवश्यक है, अनुष्ठान एक ऐसी साधना प्रक्रिया है, जो कठिन कार्यों को सरल बनाने के साथ साथ विशेष शक्ति का उपार्जन करती है।

अनुष्ठान तीन प्रकार के होते है, लघु अनुष्ठान, चौबीस हजार मन्त्र का होता है, और इसके बाद २४० आहुतियों का पुरश्चरण किया जाता है। मध्यम अनुष्ठान सवालाख मन्त्र जप का होता है जिसमें १२५० आहुतियां दी जाती हैं, तथा महापुरश्चरण चौबीस लाख मन्त्र जप का विधान होता है, और इसके दसवें हिस्से की आहुतियां दी जाती है।

लघु अनुष्ठान को नौ दिन में २७ माला प्रति दिन के हिसाब से, मध्यम अनुष्ठान ४० दिन में ३३ माला के हिसाब से तथा महाअनुष्ठान एक वर्ष में ६६ माला प्रति दिन के हिसाब से जप करके संपन्न किया जाता है।

साधना काल में निम्न तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए—

१. अनुष्ठान शुभ दिन और शुभ मुहूर्त देख कर करना चाहिए।

२. इस अनुष्ठान को प्रारम्भ करते समय सामने भगवान शङ्कर का चित्र स्थापित करना चाहिए और साथ ही साथ शक्ति की भावना भी रखनी चाहिए।
३. जहां जप करे वहां का वातावरण सात्विक होना चाहिए, तथा नित्य पूर्व दिशा की ओर मुंह करके साधना या मंत्र जप प्रारंभ करना चाहिए।
४. जप करते समय लगातार घी का दीपक जलते रहना चाहिए।
५. इसमें चन्दन या रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना चाहिए तथा ऊन का आसन बिछाना चाहिए।
६. पूरे साधना काल में ब्रह्मचर्य का पूरा पूरा पालन करना चाहिए।
७. यथाशक्ति कम भोजन करना चाहिए और साधना काल में चेहरे के या सिर के बाल नहीं कटाने चाहिए।
८. अनुष्ठान करने से पूर्व मन्त्र को संस्कारित करके पुरश्चरण करना चाहिए।
९. नित्य निश्चित संख्या में मन्त्र जप करना चाहिए, कभी कम, कभी अधिक मन्त्र जप करना ठीक नहीं है।
१०. शास्त्रों के अनुसार भय से छुटकारा पाने के लिए इस मन्त्र का १,१०० जप, रोगों से छुटकारा पाने के लिए ११,००० मन्त्र जप तथा पुत्र प्राप्ति एवं उन्नति के लिए तथा अकाल मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए १,००,००० मन्त्र जप का विधान हैं।

धर्म शास्त्र में मन्त्र शक्ति से रोग निवारण एवं मृत्यु भय को दूर करने तथा अकाल मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की जितनी भी साधनाएं उपलब्ध है उनमें महा-मृत्युञ्जय साधना का स्थान सर्वोच्च है, हजारों लाखों साधकों ने इस साधना से फल प्राप्त किया है, कोई भी साधक पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ इस साधना को करता है तो निश्चय ही वह सफलता प्राप्त करता है।

इसका सामान्य मन्त्र निम्नलिखित है पर साधक को बीज युक्त मन्त्र का ही जप करना चाहिए।

मन्त्र

त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥
(ऋ. ७-५९-१२, यजु. ३-६०)

अर्थात हम तीन नेत्रों वाले ईश्वर की उपासना करते हैं, मैं सुगन्धित और पुष्टि प्रदान करने वाले ",उर्वारुक" की तरह मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो जाऊं, अमृत से नहीं।

विधि

साधक को शुभ मुहूर्त में प्रातः उठ कर स्नान आदि से निवृत्त हो कर गुरू-स्मरण, गणेश-स्मरण, शङ्कर-पूजन आदि के बाद निम्न प्रकार से संकल्प करना चाहिए।

संकल्प

ॐ मम आत्मनः श्रुति स्मृतिपुराणोक्तफल-प्राप्त्यर्थं। अमुक यजमानस्य वा शरीरेऽमुकपोड़ा निराशद्वारा सद्यः आरोग्यप्राप्त्यर्थं श्री महामृत्यु-ञ्जय देवता प्रीतये अमुक सख्या परिमितं श्री महा-मृत्युञ्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये।

विनियोग

हाथ में जल ले कर इस प्रकार पाठ करें —

ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेव-कहोल वशिष्ठा ऋषयः पंक्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टुप-छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रो देवता ह्रीं शक्तिः श्रीं बीजं महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्ट-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

उच्चारण के बाद हाथ का जल छोड़ दें।

ऋष्यादिन्यास

निम्न मन्त्रों से सर, मुख, हृदय, लिंग और चरणों का स्पर्श करना चाहिए ।

पुनः वामदेवकहोलवशिष्ठऋषिभ्यो नमः मूर्ध्नि। पंक्तिगायत्र्युष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखेः, सदाशिव-महामृत्युञ्जयरुद्र देवतायै नमः हृदिः, ह्रीं शक्तये नमः लिंगे, श्रीं बीजाय नमः पादयो।

करन्यास

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा–अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्त्तये मां जीवाय बद्ध तर्ज-निभ्यां नमः ।

ॐ ह्रौं जूं स भूर्भवः स्वः सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः । ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपु-रान्तकाय ह्रीं ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुस्साममन्त्राय कनिष्ठि-काभ्यां नमः । ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यास

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकम् ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा-हृदयाय नमः ।

ॐ ह्रौं जूं सः भुर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवाय शिरसे स्वाहा ।

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिपुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट् ।

ॐ ह्रौ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्ध-नात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रीं ह्रीं कवचाय हुं ।

ॐ ह्रौं जुं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुस्साम-मन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय अस्त्राय फट् ।

पद न्यास

त्र्यम्बकं शिरसि । यजामहे भ्रुवौः । सुगन्धि-नेत्रयौः । पुष्टिवर्धनम् मुखे । उर्वारुक गण्डयोः । इव हृदये । बन्धनात् जठरे । मृत्या लिंगे । मुक्षीय ऊर्वो । मा जान्वोः । अमृतात् पादयोः ।

ध्यानम्

फिर शङ्कर का ध्यान करें —

हस्ताम्भोजयुगस्यकुम्भयुगला दुद्धत्य तोयं शिरः,
सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वांके सकुम्भो करो।
अक्षस्त्रङ्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्
पोयूषार्द्र तनुं भजे सगिरिजंत्र्यक्षं च मृत्युञ्जयम् ।।

(सती ख. ३८-२४)

ध्यान का स्वरूप इस प्रकार से है कि मृत्युञ्जय के आठ हाथ दृष्टिगोचर हो रहे हैं, ऊपर के दो हाथों से दो कलश उठाये हुए हैं, और नीचे वाले दो हाथों से वे सर पर जल डाल रहे हैं, सबसे नीचे वाले दो हाथों में भी वे दो कलश लिये हुए हैं जिन्हें अपनी गोद में रखा हुआ है, सातवें हाथ में रुद्राक्ष और आठवें में मृग चर्म धारण

कर रखा है, उनका आसन कमल का है, उनके सिर पर स्थित चन्द्रमा निरन्तर अमृत वर्षा कर रहा है, जिससे शरीर भीग गया है, वे त्रिनेत्र युक्त हैं और उन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है, उनके बांयी ओर भगवती गिरिजा विराज रही है।

जप

ध्यान के बाद महामृत्युञ्जय का जप करना चाहिए, मन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है –

ॐ ह्रौं जूं सः , ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यंबकम् यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूं ह्रौं ॐ।

यह सम्पुट युक्त मन्त्र है, इसका अनुष्ठान सवा लाख मन्त्र जप का माना जाता है, जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और ब्राह्मण भोजन आदि करना चाहिए, जप रुद्राक्ष की माला से करना चाहिए।

यह रोग-निवारण का अचूक विधान माना जाता है, हजारों का अनुभूत है, कोई भी व्यक्ति श्रद्धापूर्वक इसे अपनाकर अपना अभीष्ट लाभ प्राप्त कर सकता है।

लघु मृत्युन्जय

ॐ जूं सः (नाम जिसके लिए अनुष्ठान किया जा रहा है) पालय पालय सः जूं ॐ।

इसका पूर्ण अनुष्ठान ११ लाख मन्त्र जप का है, जिसका दशांश हवन करना चाहिए, शास्त्र ने इसे सर्व रोग निवारक घोषित किया है।

मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।
जन्ममृत्युजरारोगेः पीड़ितं कर्मबन्धनः॥

मन्त्र जप

यदि कोई साधक केवल मंत्र जप करना चाहे उनके लिए लघु मृत्युञ्जय मन्त्र इस प्रकार है–

ॐ जूं सः सः जूं ॐ

लघुत्तम मन्त्र

महामृत्युञ्जय का लघुत्तम मंत्र इस प्रकार है –

ॐ ह्रौं जूं सः

अनुष्ठान पूर्ण होने पर निम्न मंत्र से भगवान मृत्युन्जय को जायफल समर्पित करना चाहिए –

बलिदान मन्त्र

"ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः नमः शिवाय प्रसन्न पारिजाताय स्वाहा।"

वस्तुतः महामृत्युञ्जय विधान मृत्यु पर विजय प्राप्त करने का अद्भुत उपाय है जो साधक स्वयं न कर सके, उसे चाहिए कि वह योग्य ब्राह्मण से यह अनुष्ठान संपन्न करावे, यों भी आज के घात प्रतिघात युग में प्रत्येक व्यक्ति को अग्रिम रक्षार्थ "महामृत्युञ्जय मन्त्र" धारण कर ही लेना चाहिए।

साक्षात्कार

गायत्री मंत्र, गायत्री साधना एवं गायत्री यज्ञ के बारे में भारतवर्ष में बहुत कुछ कार्य हुआ है, पर फिर भी कुछ प्रश्न ऐसे हैं, जिनके उत्तर जन साधारण के मानस में गूंजते रहे हैं।

पिछले दिनों स्वामी अच्युतानन्द जी पत्रिका कार्यालय में पधारे थे, जो कि गायत्री मंत्र एवं गायत्री साधना के श्रेष्ठ एवं सर्वोच्च विद्वान हैं, पत्रिका ने स्वामीजी से कुछ प्रश्न जिज्ञासा संतुष्टि के लिये किये, जिनके प्रामाणिक उत्तर पत्रिका पाठकों के लिये भी उपयोगी है, इसी कारण उनका साक्षात्कार इन पन्नों पर प्रस्तुत है —

प्रश्न– क्या सर्वत्र प्रचलित गायत्री मन्त्र अपने आप में पूर्ण मन्त्र है ?

उत्तर– वस्तुतः गायत्री मंत्र सदियों से गोपनीय रहा है और भारत के श्रेष्ठ महर्षियों ने यदि इसे गोपनीय रखने का सुझाव या आज्ञा दी है तो निश्चित रूप से इसके पीछे उनका हेतु होगा, वस्तुतः जो गायत्री मंत्र प्रचलित है, वह त्रिपाद गायत्री मंत्र होने के कारण अपूर्ण है।

"ॐ भूभूर्व स्वः" तो प्रणव है, इसके बाद इस मन्त्र का पहला पद 'तत्सवितु र्वरेणियम्' दूसरा पद 'भर्गो देवस्य धीमहि' और तीसरा पद 'धियो योनः प्रचोदयात्' इस प्रकार इस मंत्र के तीन पद ही प्रचलित हैं।

संसार में जितने भी मन्त्र हैं, उनके चार चरण होते हैं, और चार चरण से युक्त मंत्र ही पूर्ण मन्त्र कहलाता है, जब तक कोई भी मन्त्र पूर्ण उच्चरित नहीं होता, तब तक उसका प्रभाव हो ही नहीं सकता, महर्षियों ने जब अनुभव किया कि यह मन्त्र तलवार की तरह धार वाला और शीघ्र प्रभावयुक्त है, पर यदि सही ढंग से और पूर्ण विधि विधान के साथ मंत्र जप नहीं किया गया तो इसका विपरीत परिणाम भी देखने को मिल जाता है, अतः उन्होंने इस महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ मन्त्र के तीन चरण ही प्रचलित किये, तथा चौथा चरण गोपनीय बनाये रखा, जबकि चारों चरणों का उच्चारण करने पर ही पूर्ण मन्त्र बनता है।

उन महर्षियों ने इस चौथे चरण को अपने तक ही सीमित रखा, और गुरू परम्परा के अनुसार अपने शिष्यों को ही गायत्री मन्त्र देते समय चौथे चरण का भेद बताया, इस प्रकार मंत्र का सबसे अधिक महत्वपूर्ण भाग वह गुप्त गोपनीय चौथा चरण ही है, और जब तक पूर्ण चारों चरणों के साथ गायत्री मन्त्र का उच्चारण नहीं किया जाता, तब तक न तो गायत्री मन्त्र

पूर्ण होता है, न उसका किसी प्रकार से कोई प्रभाव देखने को मिल सकता है।

प्रश्न– जैसा कि आपने बताया कि जन समाज में जो गायत्री मन्त्र प्रचलित है, वह त्रिपाद गायत्री है, और एक प्रकार से प्रचलित मन्त्र पूरी तरह से अपूर्ण है, अतः अपूर्ण मन्त्र के जप करने से कोई भी लाभ सम्भव नहीं हो पाता, फिर इसका चौथा चरण क्या है?

उत्तर– मैं गुरू परम्परा को नहीं तोड़ सकता, हमारे शास्त्रों ने जो मर्यादा स्थापित की है, उसके अनुसार चलना मेरा कर्त्तव्य है, शास्त्रों ने यह निर्देश दिया है कि पूर्ण गायत्री मन्त्र अपने मुंह से अपने शिष्यों को उसके कान में कहे, और इस मंत्र का रहस्य भी तभी बताये जब वह शिष्यता स्वीकार करे, अतः उस मन्त्र को सार्वजनिक रूप से उजागर करना मर्यादा के विपरीत है, परन्तु यह बात भली प्रकार से स्पष्ट है कि यदि इस अधूरे मन्त्र के लाखों मन्त्र जप कर दिये जांय या इस अधूरे मन्त्र से यज्ञ किया जाय, तो उसका निश्चित परिणाम देखने को नहीं मिल सकता, यों श्रीमालीजी इसके अधिकृत विद्वान है, और उससे इस गोपनीय चतुर्थ चरण का रहस्य ज्ञात किया जा सकता है।

प्रश्न– क्या गायत्री मन्त्र को जपते समय इनके प्रणव को साथ में लगा कर मंत्र का उच्चारण करना चाहिए या प्रणव लगाना आवश्यक नहीं होता, सही रूप में शास्त्रीय विधान क्या है?

उत्तर– प्रत्येक मंत्र के अलग-अलग प्रणव होते हैं, और वे प्रणव 'बीज मन्त्र' कहे जाते हैं, अतः किसी विशेष उद्देश्य के लिए ही प्रणव का प्रयोग किया जाता है, सामान्य रूप से गायत्री मन्त्र का जप करते समय प्रणव का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

गायत्री मन्त्र में सामान्य रूप से तीन प्रणव प्रचलित हैं उनमें पहला 'भू' दूसरा 'भुवः' और तीसरा 'स्व' है, सही रूप में देखा जाय तो गायत्री मन्त्र के सात प्रणव हैं, और सातों प्रणव अलग अलग कार्यों की सिद्धि के लिए है, इसलिए गायत्री मन्त्र से पहले विशेष उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रणव लगाना शास्त्रोचित है, परंतु यह आवश्यक नहीं हैं कि सभी प्रणव एक साथ लगाये जाय, यह भी आवश्यक नहीं है, कि उनके साथ प्रणव लगाये ही जांय, प्रणव का उपयोग अलग अलग कार्यों की सिद्ध के लिए अलग अलग रूप में लगाया जाता है, यदि गायत्री मन्त्र के माध्मम से आर्थिक उन्नति की कामना है तो इसके लिए अलग प्रणव है, और इस प्रकार की उद्देश्य पूर्ति के लिए पूरे मन्त्र से पहले केवल

गायत्री मंत्र

इस समय प्रचलित गायत्री मन्त्र के तीन चरण ही विख्यात हैं, जबकि चार चरणों से युक्त गायत्री मन्त्र ही पूर्ण कहा जाता है, इसका चौथा चरण महत्वपूर्ण, गोपनीय एवं आवश्यक भाग है, और इस गोपनीय चरण को गुरू मुख से ही प्राप्त किया जा सकता है।

मात्र वही एक अक्षर का प्रणव लगाया जाता है।

मूल मंत्र तो 'तत्सवि' से ही प्रारम्भ होता है, और यहां से लगा कर चारों चरणों का उच्चारण करने पर ही पूर्ण मंत्र बनता है, सामान्य रूप से इसी को गायत्री मंत्र कहा जाता है।

जन साधारण में जो तीनों बीज या तीन प्रणव लगा कर तीन चरण गायत्री का प्रयोग किया जाता है, मेरी राय में वह ज्यादा सही नहीं है और इससे साधक का किसी भी प्रकार से हित नहीं हो पाता।

प्रश्न– क्या गायत्री मन्त्र का जोर से उच्चारण किया जा सकता है।

उत्तर– जन साधारण में यह प्रचलित है, कि गायत्री मन्त्र केवल कान में कहने का ही मन्त्र है, यह गलत हैं. अन्य मन्त्रों की तरह इसका भी उच्चारण किया जा सकता है, और इसके सस्वर उच्चारण में किसी प्रकार की कोई बाधा या आपत्ति नहीं है, परन्तु इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रहना चाहिए कि मन्त्र का उच्चारण निर्दोष और सही रूप हो।

प्रश्न– क्या गायत्री मन्त्र में उच्चारण विशेष महत्व रखता है ?

उत्तर– गायत्री मन्त्र ही नहीं, कोई भी मन्त्र अपने आप में मूल्यवान होता है, और उसका उच्चारण किया जा सकता है, परंतु प्रत्येक मन्त्र ध्वन्यात्मक होता है, और उस मन्त्र का परिणाम और प्रभाव तभी प्राप्त हो सकता है, जबकि वह सही रूप से उच्चरित किया जाय, केवल मात्र जोरों से चिल्लाने से या पुस्तक की तरह मन्त्र को पढ़ने से गायत्री मन्त्र से जो लाभ मिलना चाहिए, वह मिल ही नहीं सकता. इसीलिए हमारे शास्त्रों में किसी भी मन्त्र को गुरू मुख से देने की प्रथा है, पुस्तक किसी भी मन्त्र को सही रूप में उसके उच्चारण को नहीं समझा सकती, केवल गुरू ही बता सकता है, कि किस मत्र का कौन सा उच्चारण है, कहां पर किस प्रकार से उच्चारण करना है, मन्त्र का बलाघात क्या है, और सही मन्त्र उच्चारण किस प्रकार से किया जाता है, जब तक यह जानकारी और ज्ञान साधक को नहीं होगा तब तक वह चाहे कितना ही जप करे उसको लाभ नहीं हो सकता, पत्रिका कार्यालय में जो शुद्ध गायत्री मन्त्र के उच्चारण-टेप तैयार किये हैं, वे वास्तव में ही सराहनीय हैं और इसके दो लाभ हुए हैं, एक लाभ तो गायत्री मन्त्र की मूल ध्वनि सुरक्षित हो सकी है, और दूसरा इस टेप को कोई भी साधक मंगवाकर टेप रेकार्डर पर सुन कर उसके अनुसार अपने मन्त्र को शुद्ध कर सकता है, जिससे कि वह उसका पूरा लाभ उठा सके।

गायत्री मंत्र तो ध्वन्यात्मक है

केवल जोरों से चीखने या तोते की तरह गायत्री मंत्र रटने से कोई लाभ नहीं हो सकता, गायत्री मंत्र तो ध्वन्यात्मक है, इसकी सही ध्वनि तो गुरू-मुख से ही सुनी जा सकती है, सही बलाघात दे कर ध्वन्यात्मक रूप से गायत्री मन्त्र जप करने पर ही इसका पूरा लाभ प्राप्त हो सकता है।

प्रश्न क्या गायत्री से सम्बन्धित यज्ञ किये जा सकते हैं?

उत्तर— हां गायत्री से सम्बन्धित यज्ञ सम्पन्न किये जा सकते हैं, परंतु जब यज्ञ की बात होती है तो यज्ञ से सम्बन्धित सारे तथ्य साधक को ज्ञात होने चाहिये, यज्ञ की वेदी, यज्ञ का कुण्ड, अग्नि स्थापन और इस प्रकार की यज्ञ से संबंधित जो पद्धति है उसका ज्ञान साधक को होना आवश्यक है, तभी उसका लाभ मिल सकता है।

प्रश्न— क्या गायत्री मन्त्र से आर्थिक उन्नति संभव है ?

उत्तर— गायत्री मंत्र मूल रूप से आध्यात्मिक मन्त्र है, अतः इस मंत्र का जप करने से आत्मा की उन्नति और आध्यात्मिक प्रगति अवश्य होती है, परन्तु इससे आर्थिक उन्नति या गृहस्थ से संबंधित बाधाओं को दूर करने में सहायता नहीं मिल पाती, सही रूप में कहा जाय तो यह आर्थिक उन्नति में बाधा कारक मंत्र है, यदि कोई संपन्न व्यक्ति भी अनुष्ठान के रूप में गायत्री मंत्र का जप करे तो उसके व्यापार और आर्थिक प्रगति में बाधाएं ही आयेगी, इसका मूल कारण गायत्री मन्त्र को नहीं समझने की वजह से है, गायत्री मंत्र तो आध्यात्मिक मंत्र है, अध्यात्म और आर्थिक उन्नति परस्पर विपरीत बिंदु हैं, आध्यात्मिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि उसका व्यापार से, धन से, और परिवार से उच्चाटन हो जाय ज्यों-ज्यों वह इनसे दूर होता जायेगा, त्यों-त्यों उसकी आध्यात्मिक उन्नति होती जायेगी, इसलिए जब हम गायत्री मंत्र के माध्यम से आध्यात्मिक उन्नति की तरफ बढ़ते हैं त्यों-त्यों व्यापार, धन और गृहस्थ पक्ष से उच्चाटन होता जाता है, उसके प्रति मोह कम होता जाता है, इसलिए यह कहा जाता है कि गायत्री मंत्र आर्थिक प्रगति में बाधक है।

परंतु यदि विशेष बीज युक्त करके गायत्री का
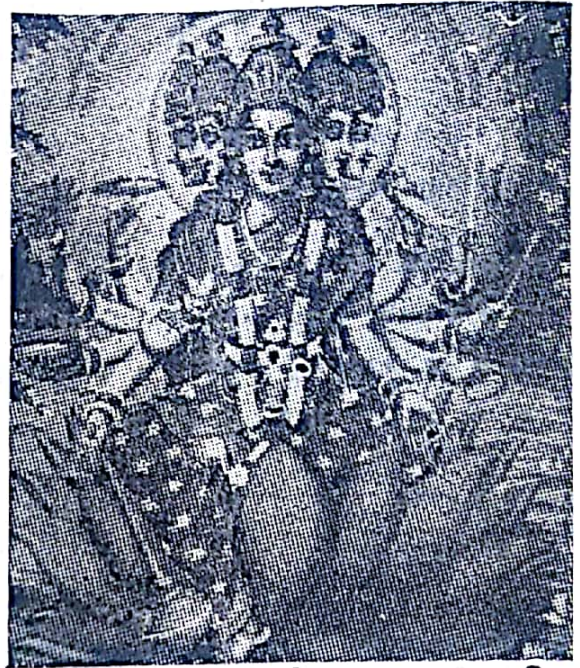
गायत्री माता

जप किया जाय या गायत्री से संबंधित यज्ञ सपन्न किया जाय तो विशेष अनुकूलता प्राप्त होने लग जाती है और वह आश्चर्यजनक रूप से आर्थिक प्रगति कर लेता है, परन्तु ऐसा सामान्य रूप से सम्भव नहीं है, इसके लिए यह आवश्यक है कि आर्थिक प्रगति से संबंधित प्रणव लगा कर के ही पूरे गायत्री मंत्र का उच्चारण करें, और इस प्रकार यदि उसका जप किया जाय तभी उसे आर्थिक प्रगति का लाभ मिल सकता है, सामान्य रूप से हम जिस प्रकार से गायत्री उच्चारण और गायत्री जप अथवा गायत्री यज्ञ करते हैं उससे आर्थिक उन्नति निश्चित रूप से होती है, परंतु इससे आर्थिक प्रगति किसी भी प्रकार से सम्भव नहीं है।

श्री कुबेर धनदायक गणपति प्रयोग

भाद्रपद शुक्ल ४, सोमवार तदनुसार ४-९-८९ को "गणेश जयन्ती" है, जिसे पूरे भारतवर्ष में अत्यन्त उत्साह के साथ मनाते हैं, साधकों के लिए तो यह एक विशेष पर्व है, जब वे सिद्धिदायक गणपति का प्रयोग सम्पन्न करते हैं।

स्वामी शिवानन्दजी ने यह प्रयोग पत्रिका के लिए सुलभ किया है, यों तो गणपति प्रयोग कई स्थानों पर प्राप्त होते हैं, पर कुबेर धनदायक गणपति प्रयोग पहली बार ही देखने में आया है जिसे पत्रिका पाठकों के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है।

भगवान गणपति ऋद्धि और सिद्धि के पति हैं, जिनके पुत्रों का नाम "लाभ" और "सुख" है, इस प्रकार जीवन में धन धान्य समृद्धि, सुख और सम्पदा देने में वे अग्रगण्य हैं।

गणपति प्रयोग तो साधकों ने संपन्न किये ही होंगे, परंतु मुझे कई वर्षों पहले एक उच्च कोटि के महात्मा से "श्री कुबेर धनदायक गणपति प्रयोग" प्राप्त हुआ था, यह मेरा अनुभव गम्य प्रयोग है, और जीवन में अन्य प्रयोग भले ही निष्फल हो सकते हैं, परंतु यह प्रयोग तुरंत फलदायक है।

मैंने अनुभव किया है, कि मात्र लक्ष्मी प्रयोग या कुबेर प्रयोग से पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हो सकती जब तक उसमें विघ्नहर गणपति का समावेश न किया जाय, इस दृष्टि से यह प्रयोग प्रत्येक साधक के लिए अनिवार्य है।

इस प्रयोग की विधि सरल होते हुए भी शीघ्र प्रभाव दायक है, साधक इसके मंत्र का प्रयोग करके पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

गणेश चतुर्थी अर्थात् ४-९-८९ के दिन साधक स्नान कर सफेद वस्त्र धारण कर स्वयं या अपनी पत्नी या

परिवार के साथ पूजा स्थान में बैठ जाय, और सामने पूजन सामग्री रख दें।

पूजन सामग्री में निम्न बारह वस्तुओं की जरूरत होती है — १- जल पात्र, २- पुष्प और पुष्प माला, ३- केसर, ४- श्री फल अर्थात् नारियल, ५- चावल, ६-अगरबत्ती, ७-दीपक—ऐसा दीपक जिसे चौमुहा दीपक कहते हैं, और यह दीपक गेहूँ के आटे से बनाया जा सकता है, इस दीपक के चार मुंह, चार दिशाओं में होते हैं, और जिसे एक साथ जलाया जा सकता है, इस दीपक में शुद्ध घी का प्रयोग किया जाना चाहिए, ८-नैवेद्य- इसमें गेहूँ के आटे को घी में सेक कर उसमें गुड़ मिला कर लड्डू बना कर नैवेद्य रखा जा सकता है, ९-फल, १०- अबीर गुलाल या कपूर, ११- वस्त्र, १२-अत्यन्त तेजस्वी कुबेर धनदायक गणपति महायन्त्र।

कुबेर धनदायक गणपति महायन्त्र

इस साधना में इस यन्त्र का विशेष महत्व है, जो कि भोज पत्र पर लिखा जा सकता है, अथवा ताम्र पत्र पर अंकित इस महामन्त्र का प्रयोग किया जाना चाहिए, इस संबंध में रुद्रयामल तन्त्र में बताया गया है, कि —

द्वि-सप्ततिकं नव-कोष्टात्मकं यन्त्रं विशकाविनां-कितं नव-कोष्टे नवांक–द्वि–सप्ततिर्यथांककं।

इस प्रकार का यन्त्र आप कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं, यो सुविधा के लिए पत्रिका फिलहाल बहुत थोड़े से यन्त्र तैयार करवा कर सिद्ध कर सकी है, जिसका साधक उपयोग कर सकते हैं, यह यन्त्र अत्यन्त तेजस्वी है और गणपति सिद्धि के लिए तथा कुबेर साधना के लिए अपने आप में अद्वितीय यन्त्र है।

इस यन्त्र पर कुछ अन्य प्रयोग

मूल प्रयोग तो मैं आगे दे ही रहा हूं, मगर इस यंत्र पर कुछ और भी प्रयोग हैं, जिसे साधक चाहें तो संपन्न कर सकते हैं।

१- कार्य सिद्धि के लिए

विशेष कार्य सिद्धि के लिए चांदी की शलाका से केसर के द्वारा इससे संबंधित मन्त्र इसी यन्त्र पर लिखे और मिटाता रहे, इस प्रकार नौ दिनों में नौ सौ बार यन्त्र अंकित करें, तो निश्चय ही उसे अभूतपूर्व कार्य सिद्धि होती है, यह प्रयोग गुरू पुष्य से प्रारम्भ करना चाहिए।

२- संतान प्राप्ति के लिए

निश्चित रूप से पुत्र प्राप्ति के लिए स्त्री स्नान कर बालों को खुला छोड़ कर इस यन्त्र पर नौ दिनों में नौ सौ बार दुर्वा जिसे हिंदी में "दूब" कहते हैं, और जो बगीचे में उगती है, उसे यह मन्त्र पढ़ते हुए चढ़ावे तो अगले महीने ही गर्भ धारण होता है और पुत्र पैदा होता है।

३- सुयोग्य पति प्राप्ति के लिए

जिस कन्या का विवाह नहीं हो रहा हो, उसके लिए यह प्रयोग अनुभूत है, उसे चाहिए कि नित्य सौ पीपल के पत्तों पर यह मन्त्र केसर से लिखें, इस प्रकार नौ दिन तक करें, नित्य उन पत्तों पर मंत्र लिख कर वे पत्ते एक स्थान पर एकत्र करती रहे, जब नौ सौ पत्ते एकत्र हो जाय तब उसे तालाब में विर्सजित कर दें, तो एक महीने के भीतर भीतर निश्चित रूप से सगाई या शादी हो जाती है।

४- गृहस्थ सुख के लिए

इस यन्त्र पर पीले रंग में रंगे हुए चावल थोड़े थोड़े ले कर इस यन्त्र पर मंत्र पढ़ते हुए चढ़ावे, और तीन दिन में नौ सौ बार मंत्र उच्चारण कर, चावल चढ़ा दें, तो निश्चय ही घर में सुख शान्ति रहती है, और कलह समाप्त हो जाता है।

५- परीक्षा या इन्टरव्यू में सफलता के लिए

इस यन्त्र को किसीं थाली में रख कर उसके ऊपर धीरे धीरे जल चढ़ाता हुआ मंत्र उच्चारण करे, और इस प्रकार नित्य सौ बार मंत्र उच्चारण करे, तीन दिनों तक ऐसा करके फिर परीक्षा दे, या इन्टरव्यू में जावे तो उसे अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है ।

६- उत्तम स्वास्थ्य या रोग मुक्ति के लिए

कैसा ही भीषण रोग हो या बीमारी समाप्त नहीं हो रही हो, अथवा घर में किसी न किसी को बीमारी बनी रहती हो, तो यह प्रयोग लाजबाब है, शुक्रवार के दिन इस यन्त्र को किसी थाली में रख कर ऊपर दूध और जल मिला कर वह जल धीरे धीरे यन्त्र पर डालता रहे और मंत्र उच्चारण करता रहे, इस प्रकार नित्य तीन माला मत्र जप करे, और पांच दिनों तक यह प्रयोग संपन्न करें, ऐसा करने पर आश्चर्यजनक रूप से सुधार होने लगता है, और रोग हमेशा के लिए कट जाता है ।

७- व्यापार वृद्धि के लिए

व्यापार वृद्धि के लिए यह प्रयोग आश्चर्यजनक रूप से सफलतादायक है. रविवार की रात्रि को इस यन्त्र को थाली में रख दें और इसके चारों ओर नौ घी के दीपक लगा दें, और फिर साधक नित्य तीस माला मन्त्र जप करें, यह तीन दिनों का प्रयोग है, उसके बाद इस यंत्र को दुकान में रख दे जहां रूपये पैसे रखे जाते हैं, तो उसी दिन से आश्चर्यजनक व्यापार वृद्धि होने लगती है, और नित्य व्यापार में वृद्धि होती रहती है ।

८- शत्रुनाश के लिए

इस यंत्र को थाली में रख कर यंत्र के सामने शत्रु का नाम लिख दें और फिर मूंगे की माला से मंत्र उच्चारण करता हुआ, नित्य ग्यारह माला मंत्र जप करे और प्रत्येक मंत्र के साथ यन्त्र पर काली मिर्च का एक या दो दाना चढ़ावे, ऐसा तीन दिन तक करें, तो कैसा ही शत्रु हो, वह समाप्त हो जाता है, यदि राज्य बाधा हो तो इससे निश्चय ही समाप्त ही जाती है, प्रयोग के बाद काली मिर्च जमीन में गाड़ देनी चाहिए, मन्त्र जप करते समय साधक चाहे तो बांये हाथ से माला जप प्रयोग कर सकता है ।

मूल प्रयोग

ऊपर मैंने इस यंत्र के अन्य प्रयोग दिये हैं, जो साधक चाहे तो इन प्रयोगों को संपन्न कर लाभ उठा सकता है, इस दृष्टि से देखा जाय तो इस यंत्र के कई लाभ हैं, और यह यन्त्र जीवन भर के लिए उपयोगी है ।

गणेश चतुर्थी के दिन जो प्रयोग संपन्न करना है, जिससे गणपति सिद्धि प्राप्त होती है, और इस सिद्धि के साथ साथ घर में सुख, सम्पदा भी आने लगती है, इस प्रयोग से आर्थिक, व्यापारिक और भौतिक उन्नति तो होती ही है, गणपति स्वयं साक्षात् दर्शन दे कर साधक की इच्छा भी पूर्ण करते हैं ।

जैसा कि मैंने बताया कि साधक स्नान कर सफेद धोती पहिन ले और ऊपर भी सफेद धोती ओढ़ ले और यदि घर में हो तो गणपति का चित्र सामने स्थापित कर दें, उसके बाद किसी पात्र में गणपति यन्त्र अर्थात् 'कुबेर धनदायक गणपति महायन्त्र' को स्थापित कर दें, उसे दूध से, दही से, घी से, शहद से और शक्कर से स्नान करा कर फिर शुद्ध जल से यंत्र को धो लें और उस यंत्र को किसी दूसरे पात्र में स्थापित कर दें, और यन्त्र पर केसर से नौ बिंदियां लगायें फिर यन्त्र के सामने भोग लगा दें, और अगरबत्ती तथा दीपक प्रज्वलित कर दें, नारियल को यन्त्र के सामने ही चावलों की ढ़ेरी पर स्थापित कर दें ।

इसके बाद साधक को चाहिए कि शुद्ध स्फटिक की माला से निम्न मंत्र की इक्कीस माला मंत्र जप करें --

महा मंत्र

ॐ ह्रीं क्रों श्रां अनुत्पन्नानां द्रव्याणमुत्पादको त्पादकोत्पन्नान द्रव्याणा वृद्धिकराय वासुदेवाय नमः ।।

मन्त्र जप पूरा होने पर वह स्फटिक माला यन्त्र पर ही रख दे, और जो सामने प्रसाद चढ़ाया हुआ है, वह परिवार के सदस्यों को बांट दें, और भक्ति भाव से गणपति या लक्ष्मी की आरती संपन्न करें।

इस प्रकार यह प्रयोग करने से निश्चय ही गणपति सिद्धि प्राप्त होती है, क्योंकि ठीक समय पर ठीक कार्य करने पर ही पूर्ण सफलता प्राप्त होती है, गणेश चतुर्थी तो अपने आप में ही इस दृष्टि से श्रेष्ठतम पर्व है, अतः साधकों को चाहिए कि वे इस पर्व का उपयोग करें और लाभ उठायें, यह प्रयोग दिन या रात्रि को कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है।

।। श्री महालक्ष्मी कवचम् ।।

ब्रह्माजी द्वारा रचित यह कवच लक्ष्मी से सम्बन्धित सर्वोत्तम कवच है, जिसका नित्य एक बार पाठ करने से ही निरन्तर आर्थिक उन्नति होती रहती है।

अस्य श्री महालक्ष्मी-कवच-मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री महालक्ष्मी देवता, श्री महालक्ष्मी-प्रीतये पाठे विनियोगः ।

समस्त कवचानां तु तेजस्वी-कवचमुत्तमम् ।
आत्म-रक्षणमारोग्य सत्यं त्वं ब्रूहि गीष्पते ।।१।।

महा-लक्ष्म्यास्तु कवचं प्रवक्ष्यामि समासतः ।
चतुर्दशसु लोकेषु रहस्यं ब्रह्मणा पुरा ।।२।।

शिरो मे विष्णु-पत्नी च ललाटममृतोद्भवा ।
चक्षुषी सु-विशालाक्षीश्रवणे सागरेम्बुजा ।।३।।

घ्राणं पातु वरारोहा जिह्वामाम्नाय-रूपिणी ।
मुखं पातु महालक्ष्मीः कण्ठं वैकुण्ठ-वासिनी ।।४।।

स्कन्धौ मे जानकी पातु भुजौ भार्गव-नन्दिनी ।
बाहू द्वौ द्रविणी पातु करौ हरि-वराङ्गना ।।५।।

वक्षः पातु च श्रीदेवी हृदयं हरि-सुन्दरी ।
कुक्षिं च वैष्णवी पातु नाभिं भुवन मातृका ।।६।।

कटिं च पातु वाराही सक्थिनी देव-देवता ।
ऊरू नारायणी पातु जानुनी चन्द्र-सोदरी ।।७।।

इन्दिरा पातु जङ्घे मे पादौ भक्त-नमस्कृता ।
नखान् तेजस्विनी पातु सर्वाङ्गं करूणामयी ।।८।।

तांत्रोक्त

१०८ लक्ष्मी सिद्धि जयन्ती

★

सिद्धाश्रम पंचाग के अनुसार ९-९-८९ अर्थात भाद्रपद शुक्ल ९ शनिवार को १०८ लक्ष्मी सिद्धि जयन्ती है। यह अपने आप में विशेष पर्व है, इस अवसर पर पत्रिका में परम गोपनीय तांत्रोक्त लक्ष्मी सिद्धि प्रयोग प्रस्तुत किया जा रहा है, जो कि पूज्यपाद निजानन्द जी के माध्यम से प्राप्त हुआ है।

यह प्रयोग अपने आप में इतना अधिक महत्वपूर्ण है, कि लगभग समस्त तांत्रिक ग्रन्थों में इसकी प्रशंसा की गई है।

★

स्वामी निजानन्द जी अत्यन्त उच्चकोटि के योगी और तन्त्र शास्त्र के सिद्धतम आचार्य हैं, तंत्र के क्षेत्र में उन्होंने कई ग्रन्थ लिखे हैं, और सिद्धाश्रम के आचार्य हैं, सिद्धाश्रम में संपन्न होने वाले यज्ञों में इन्होंने आचार्य के रूप में भी कार्य संपन्न किया है ।

इस अवसर पर उन्होंने परम गोपनीय '१०८ लक्ष्मी सिद्धि प्रयोग' बताया है, जो कि प्रत्येक साधक के लिए आवश्यक है।

साधक को इस दिन प्रातः काल उठ कर यह निश्चय करना चाहिए कि आज मैं इस अद्वितीय प्रयोग को सपरिवार संपन्न करूंगा, जिससे कि मेरे घर में महालक्ष्मी पूर्ण रूप से स्थापित हों, और वह जीवन की समस्त बाधाओं को दूर करने में सहायक हो।

उसके बाद साधक गंगा जल से या नदी के तट पर अथवा घर पर शुद्ध जल से स्नान कर के पीले वस्त्र धारण करे, महिला साधिका हो तो पीली कंचुकी और पीली साड़ी पहिने। यों साधक को चाहिए कि यह प्रयोग संभव हो तो अपनी पत्नी और परिवार के साथ संपन्न

करें।

यह प्रयोग दिन या रात्रि को कभी भी संपन्न किया जा सकता है, यथासंभव इस प्रयोग को रात्रि को ही संपन्न करना चाहिए।

फिर साधक सामने पूजन सामग्री रख दे, इसमें १-शुद्ध जल पात्र, २- चांदी की थाली या पीतल की थाली, (इस प्रयोग में लोहे या स्टील की थाली का प्रयोग न करें) ३- नारियल, ४- पुष्प और पुष्प मालाएं, ५-गुलाब का इत्र, ६- अबीर गुलाल, ७- केसर, ८-त्रिगंध —कुंकुम, केसर और कपूर को बराबर मात्रा में मिला कर, १०- दूध का बना हुआ प्रसाद, ११- भगवती महा-लक्ष्मी का सुन्दर चित्र, और **१२- सिद्ध १०८ लक्ष्मी यन्त्र और धनदा यन्त्र।**

पूजन प्रयोग

फिर साधक हाथ में जल ले कर संकल्प करे, कि मैं और मेरा परिवार समस्त प्रकार के पुण्यों का फल प्राप्त करने आयु, आरोग्य तथा ऐश्वर्य प्राप्त करने के लिए अपने परिवार के साथ मैं अमुक गोत्र. अमुक पिता का पुत्र: अमुक नाम का साधक यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं।

इसके बाद अपने सामने पात्र में उपरोक्त दोनों यंत्र स्थापित कर दें, और कच्चे दूध से स्नान करा कर फिर जल से धोकर पोंछ लें, तत्पश्चात् वह पात्र अलग रख कर वहीं पर दूसरा पात्र स्थापित करें और उस पात्र में इन दोनों यंत्रों को रख दें।

फिर अपने सामने एक सुन्दर छोटा सा घड़ा चावलों की ढेरी पर या किसी अन्य आधार को लेकर स्थापित करें और घट में दही अक्षत फल पीपल के पत्ते डाल कर जल से भर दें, और उसके ऊपर उस पात्र को रख दें जिसमें दोनों यंत्र रखे हुए है, इसके बाद सामने घी का दीपक और अगरबत्ती लगावे।

तत्पश्चात् ११ पीपल के पत्ते एक डोरी में या धागे में बांध कर दरवाजे पर बांधे और ग्यारह पीपल के पत्ते या बड़ के पत्ते लेकर घड़े के ऊपर से पात्र हटाकर घड़े के मुंह पर ग्यारह पत्ते खड़े रखकर उस पर पुनः पात्र स्थापित कर दें फिर घड़े के मुंह पर कलावा या मोली बांधे।

इसके बाद घड़े के ऊपर त्रिगंध से निम्न मंत्र अंकित करें।

घट लक्ष्मी मंत्र

"ॐ ऐं ऐं ऐश्वर्याय नमः"

इसके बाद अपने सफेद आसन को "क्लीं फट्" शब्द का उच्चारण करते हुए उसे शुद्ध करे और त्रिगंध से ही आसन पर त्रिकोण बनावे जो कि महाकाली, महालक्ष्मी और महा सरस्वती का प्रतीक है, इस आसन पर साधक बैठ जाय और अपना मुंह पूर्व या उत्तर की ओर करें।

इसके बाद घड़े पर केसर से १०८ बिन्दियां लगाये जो कि १०८ लक्ष्मियों का प्रतीक है, तत्पश्चात् पूर्ण श्रद्धा के साथ घी के ९ दीपक सामने लगा दे और ९ अगरबत्ती या धूप लगावे, इसके बाद १०८ घट लक्ष्मी का पूजन करें।

पूजन प्रयोग

सर्व प्रथम दोनों हाथ जोड़ कर भगवती लक्ष्मी का ध्यान करें

ध्यान

पद्मानना पद्मकरां पद्मालाविभूषिताम्।

क्षीरसागरसंभूतां हेमवर्णा – समप्रभाम् ।।
क्षीरवणसमं - वस्त्र–दधानां हरिवल्लभाम् ।
भावेय भक्तियोगेन भार्गवीं कमलां शुभाम् ।।

ध्यान करने के बाद साधक जो सामने लक्ष्मी चित्र स्थापित किया हुआ है, उस चित्र को भी जल से पोंछ कर घट के साथ साथ उसकी भी पूजा करे।

पूजन प्रयोग निम्न प्रकार से है —

आवाहन

सर्वमंगल मांगल्यै विष्णुवक्षः स्थलालये ।
आवाहयामि देवी त्वां क्षीरसागरसंभवे ।।
श्रीलक्ष्मी देव्यै नमः आवाहनं समपयामि ।

गन्ध :

कर्पूरागर -कस्तूरो -कुंकुमादि -समन्वितम ।
गन्धं ददाम्यहं देवी सर्वमंगलदायिनि ।।
श्रीलक्ष्मीदेव्यै नमः गन्धं समर्पयामि ।

अक्षत :

अक्षतान् धवलान् देवी शालीयांस्तण्डुलान् शुभान् ।
हरिद्राकुंकुमोपेतान् गृहाण करूणार्णवे ।।
श्रीलक्ष्मी देव्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि ।

पुष्प :

मन्दार पारिजाताब्जैः मल्लिकावकुलै रपि ।
केतक्युत्पलकंह्लारैः पूजयामि हरिप्रियै ।।
श्रीलक्ष्मीदेव्यै नमः पुष्पाणि समर्पयामि ।

धूप :

धूपं ददामि ते देवि सुगन्धं च मनोहरम् ।
गृहाण त्वं महालक्ष्मि भक्तानाभीष्टदायिनि ।।
श्रीलक्ष्मीदेव्यै नमः धूपं आघ्रापयामि ।

दीप :

साज्यवर्तित्रयोपेत प्राज्यमंगलदायिनि ।
गृहाण मंगल - दीपं वरलक्ष्मि नमोस्तुते ।।
श्रीलक्ष्मीदेव्ये नमः दीपं दर्शयामि ।

नैवेद्य :

नाना मोदकभक्ष्यैश्च संयुत फललड्डुकैः ।
नैवेद्य गृह्यतां देवी नारायणकुटुम्बिनि ।।
श्रीलक्ष्मीदेव्यै नमः नैवेद्यं निवेदयामि नाना ऋतुफलानि च समर्पयामि ।

नीराजन :

नीराजनं समानीत क्षीरसागर - संभवे ।
गृह्यतामर्पितं भक्त्या गरुड़ध्वजभामिनी ।।
श्रीलक्ष्मी देव्यै नमः नीराजनं दर्शयामि ।

पुष्पांजलि :

पुष्पांजलिं गृहाणेयं पुरूषोत्तमवल्लभे ।
भक्त्या समर्पितं देवि सुप्रीता भव सर्वदा ।।
श्रीलक्ष्मीदेव्यै नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि ।

नमस्कार :

नमोस्तु नालीकनिभाननायै नमोस्तु
नारायणवल्लभायै ।
नमोस्तु रत्नाकरसंभवायै नमोस्तु
लक्ष्म्यै जगता-जनन्यै ।।
सरसिजनिलये सरोजहस्ते ।
धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ।।

भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे ।
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ।।
पद्मासने पद्मकरे सर्वलोकैकपूजिते ।
नारायणप्रिये देवी सुप्रीता भव सर्वदा ।।
श्रीलक्ष्मीदेव्यै नमः नमस्करोमि ।

विशेषार्घ्य :

गोक्षीरेण युतं देवि गन्धपुष्पसमन्वितम् ।
अर्घ्यं गृहाण वरदे वरलक्ष्मि नमोस्तु ते ।।
श्रीलक्ष्मी देव्यै नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।

समर्पण :

अनया पूजया श्री वरलक्ष्मी देवी प्रीयन्ताम् ।

जिन साधकों को संस्कृत का ज्ञान नहीं है वे ऊपर लिखित श्लोक न बोल कर केवल "जलं समर्पयामि" या "गंध समर्पयामि" कह कर पूजन कर सकते है ।

इस प्रकार का पूजन करने के बाद दोनों यंत्रों का पुनः पूजन करे और फिर जो संस्कृत नहीं जानते है, उनको चाहिए कि निम्न १०८ लक्ष्मीं मंत्र की १०१ माला मंत्र जप कर लें ।

१०८ लक्ष्मी मंत्र

ॐ ऐं ऐश्वर्याधिपति महालक्ष्म्यै ऐं नमः"

जो थोड़ा बहुत संस्कृत जानते हैं, वे निम्न स्तोत्र के ५१ पाठ कर ले, उपरोक्त दोनों स्थितियों अर्थात साधक या तो १०१ माला मंत्र जप करें या केवल ५१ बार निम्न परम गोपनीय सिद्ध १०८ महालक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करें,

१०८ महालक्ष्मी स्तोत्र :

अथात सम्प्रवक्ष्यामि धनदास्तोत्रमुत्तमम् ।
यथोक्तं सर्वतन्त्रषु इदानी तत् प्रकाशितम ।।
नमः सर्वस्वरूपेण नमः कल्याणदायिके ।
महासम्पत्प्रदे देवी धनदाये नमोस्तु ते ।।१।।
महाभोगप्रदे देवि महाकामप्रपूरिते ।
सुखमौक्षप्रदे देवी धनदायै नमोस्तु ते ।।२।।
ब्रह्मरूपे सदानन्दे सदानन्द स्वरूपिणि ।
द्रुतसिद्धिप्रदे देवी धनदाये नमोस्तु ते ।।३।।
उद्यत्सूर्यप्रकाशा भे उद्यदादित्यमण्डले ।
शिवतत्वप्रदे देवी धनदायै नमोस्तु ते ।।४।।
विष्णु रूपे विश्वमते विश्वपालनकारिणि ।
महासत्वगुणाक्रान्ते धनदायै नमोस्तु ते ।।५।।
शिवरूपे शिवानन्दे करुणानन्द विग्रहे ।
विश्वसंहाररूपे च धनदायै नमोस्तु ते ।।६।।
पंचतत्वस्वरूपे च पंचाचार - सदारते ।
साधकाभीष्टवे देवीं धनदायै नमोस्तु ते ।।७।।
इदं स्तोत्र मया प्रोक्त साधकाभीष्टदायकम् ।
यः पठे-पाठयेन्द्वापि स लभेत् सकल फलम ।।८।।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स्तोत्रमेतत् समाहितः ।
स सिद्धिलभते शीघ्र नात्र कार्य विचारणा ।।९।।
इदं रहस्यं परमं स्तोत्र परम दुर्लभम् ।
गोपनीय प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ।।१०।।
अप्रकाश्यमिदं देवी गोपनीयं परात्परम् ।
प्रपठेन्नात्र सन्देहो धनवान् जायते चिरात् ।।११।।

वस्तुतः यह प्रयोग अत्यन्त सरल है, पूजन करने के बाद साधक भगवती लक्ष्मी की आरती करें और अपने परिवार में नैवैद्य वितरित करें । इसके बाद धनदा यंत्र को घर का मुखिया अपने बाजू में बांध ले और "सिद्ध १०८ लक्ष्मी यंत्र" को पूजा स्थान में स्थापित कर दें, उस घट को जिस का पूजन किया गया था, उसका जल पूरे घर में छिड़क दें और वह घट किसी मन्दिर में जा कर रख दे ।

इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न होता है. पर यह प्रयोग अत्यन्त धनदायक सिद्धिदायक और तत्क्षण सफलता दायक है, आप इस प्रयोग को सम्पन्न करें और दूसरे दिन से ही इसकी सिद्धि या इसके चमत्कार को अनुभव करें

अघोर गौरी-साधना

आदरणीय पण्डित जी,

सादर चरण स्पर्श।

आपसे बिछुड़े हुए लगभग एक वर्ष होने को आया है। मुझसे ऐसी क्या त्रुटि हुई है कि मेरे पत्र का उत्तर भी मुझे प्राप्त नहीं हो रहा है, इस एक वर्ष में मैंने कितने ही पत्र आपको दिये होंगे, परन्तु यह मेरा दुर्भाग्य है कि मुझे एक भी पत्र का उत्तर प्राप्त नहीं हो सका। मुझसे यदि कोई ग़लती हो गई हो तो मैं उसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ। मैं तो बालक हूँ और बालक हमेशा गलती करते रहते हैं आप मेरे लिए आदरणीय हैं और एक प्रकार से मेरे सर्वस्व हैं। अतः आपसे अलग रहकर मैं जीवित नहीं रहना चाहता। मुझसे जो कुछ अपराध हुआ हो वह मुझे बतायें जिससे कि मैं उसका प्रायश्चित करूं।

मुझे वे दिन याद हैं जब मैं आपके सान्निध्य में दो साल रहा था और आपसे काफी कुछ ज्ञान मुझे मिला था। यद्यपि मैंने आपसे मन्त्र साधना ही सीखी थी परन्तु मैं मन-ही-मन इसलिए चिन्तित था कि मेरी एक ही बहिन है जो कि रंग से काली और दिमाग से कुछ कमजोर है, इसलिए बहुत प्रयत्न करने पर भी उसका कहीं विवाह नहीं हो रहा था। मेरे पिताजी ने उसके विवाह के लिए अत्यधिक प्रयत्न किए थे पर अन्त में थक गये थे और यह निश्चय हो गया था कि अब इसका विवाह होना संभव नहीं है।

उसके विवाह के लिए मेरे पिता अपने मकान को गिरवी रखकर भी दहेज की पूर्ति में हिचकिचा नहीं रहे है, उन्होंने कई जगह इस प्रकार का आश्वासन भी दिया था कि आप जो भी चाहेंगे मैं यथासम्भव उसकी पूर्ति करूंगा परन्तु फिर भी मेरे पिता अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त नहीं कर पाये थे।

जिसके घर में जवान बहिन हो और उसका विवाह नहीं हो तो माता पिता या भाई को कितना मानसिक दुख होता है इसकी कल्पना वही कर सकता है जो मुक्त भोगी हो, परन्तु मुझे रह रह कर एक विचार आ रहा था कि यदि मैं आपके सामने इस समस्या को रखूं तो शायद उसका समाधान मिल सकेगा।

पिछली बार जब मैं आपके पास आया था, तो मैं इस समस्या से बहुत अधिक दुखी और परेशान था। परंतु मेरी आत्मा इस बात के लिए तैयार नहीं थी कि मैं अपने स्वार्थ के लिए आपको परेशान करूं, परन्तु जब एक दिन अघोर मन्त्रों की चर्चा चली तो आपने ऐसे ही एक मन्त्र की चर्चा की थी कि वह मंत्र सामान्य दिखाई देता है, परन्तु विवाह कार्य में पूर्ण सफलता दायक है, यह बात सुन कर जहां मुझे मन ही मन प्रसन्नता हुई, वहीं मेरी आंखों में आंसू भी छलछला आये, मुझे उस एक क्षण में अपनी बहिन का स्मरण हो आया था, मैं उठ कर एक तरफ चला गया था, मैं अपने आंसू आपको दिखा कर परेशान नहीं करना चाहता था।

आपने बताया था कि यह मन्त्र अघोर मन्त्रों में विवाह मन्त्र कहलाता है और यदि नित्य इस मंत्र की एक सौ आठ मालायें फेरे तो ग्यारह दिनों के भीतर भीतर अनुकूल समाचार प्राप्त हो सकते हैं, पर आपने यह भी बताया था कि इस मंत्र का जप वही करें जिनका विवाह होना है, आपने जो मंत्र बताया था वह इस प्रकार था—

अघोर विवाह मन्त्र

मखानों हाथी जर्द अम्बारी

उस पर बैठी कमाल खां की सवारी
बैठे चबूतरे पढ़े कुरान
हजार काम दुनिया का करे
एक काम मेरा कर
न करे तो तीन लाख तैंतिस हजार पेगम्बरों
की दुहाई ॥

मैंने इस मंत्र को एक अलग कागज पर नोट कर लिया था और उसके तीसरे दिन आपकी आज्ञा से मैं अपने घर चला आया था।

घर आने पर मैंने देखा कि मेरी घर की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है, और पिताजी बेटी के विवाह की चिन्ता में घुल कर आधे हो गये हैं और मेरी मां ने खाट पकड़ ली है ।

मैंने आपके बताये हुए मन्त्र का प्रयोग करने का निश्चय किया, यद्यपि यह मेरा अपराध ही है कि बिना आपको सूचना दिये इस प्रकार का प्रयोग अपनी बहिन से करवाया परंतु इसके पीछे मेरा व्यक्तिगत स्वार्थ था और उससे भी ज्यादा यह स्वार्थ था कि मेरे माता-पिता की चिन्ता दूर हो सके।

मैंने अपने बहिन को इस मन्त्र के बारे में बताया तो उसने इस मन्त्र को जपने से मना कर दिया, इससे पूर्व उसने सैंकड़ों व्रत तप पूजा-पाठ आदि कर लिये थे और एक प्रकार से वह इन सबसे निराश हो चुकी थी, उसे विश्वास हो गया था कि ये मन्त्र-तन्त्र झूठे हैं, इनमें किसी प्रकार की कोई सत्यता नहीं है, पर मेरे आश्वासन देने पर कि यह अन्तिम बार है, मेरा कहना मान कर इस मन्त्र का जाप ग्यारह दिन कर ले, यदि इस बार भी सफलता नहीं मिली तो भविष्य में तुझे मैं कुछ भी नहीं कहूंगा।

मेरे कहने से उसने इस मन्त्र का जप प्रारम्भ किया, आश्चर्य की बात यह है कि नवें दिन ही मेरे दूर के चाचाजी ने एक लड़के बारे में सूचना दी, उनका घर संपन्न और हम से बड़ा चढ़ा था, लड़का शोभन तथा उच्च पद पर नौकरी कर रहा था, इसलिए मेरे पिताजी को बिल्कुल विश्वास नहीं था कि वहां सगाई हो सकेगी, परन्तु चाचाजी और मेरे विशेष आग्रह पर वे गये और प्रसन्नता की बात यह है कि उन्होंने संबंध स्वीकार कर लिया।

इस अनुष्ठान को प्रारम्भ हुए ग्यारह दिन बीते थे कि लड़के वालों ने मेरे घर पर आ बहिन को देख कर स्वीकृति दे दी, उन्होंने कहा हमें रंग-रूप की जरूरत नहीं है, हमें तो सुशील कन्या चाहिए, दहेज की भी इच्छा नहीं है, क्योंकि भगवान की पूरी कृपा है।

ग्यारहवें दिन मेरी बहिन ने अनुष्ठान पूरा किया, और उसके एक महीने बाद ही विवाह संपन्न हो गया, विवाह निर्विघ्न समाप्त हुआ और अब बहिन अपने ससुराल है तथा वहां पूरी तरह से सुखी है।

मैंने यह पहली बार अनुभव किया कि अघोर मन्त्र भी अपने आप में चमत्कारिक हैं, उस दिन बातों ही बातों में आप से यह मंत्र प्राप्त हो गया था और इससे एक बार घर का कल्याण हो गया है।

वास्तव में ही आपके साथ रहने से प्रत्येक क्षण मूल्यवान बन जाता है, बातचीत के प्रसंग में भी हम शिष्यों को कब कौन सा रत्न प्राप्त हो जाय, कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

यद्यपि मुझसे गलती हुई है कि मैंने इस मन्त्र का जप बिना आपकी अनुमति के अपनी बहिन से संपन्न कराया है, पर इसके लिए इतनी कठोर सजा न दें कि आपके चरणों से बिछुड़ना पड़े।

मैं अपने अपराध के लिए बार बार क्षमा प्रार्थी हूं, आप मेरे अपराध को क्षमा कर पत्र का उत्तर दें और स्वीकृति दें जिससे कि मैं आपके चरणों में उपस्थित हो सकूं।

आपका ही,
कृष्ण गोपाल 'यदु'

१४-६-८६ के अवसर पर

अनन्त चतुर्दशी साधना

अनन्त चतुर्दशी का शास्त्रों में विशेष महत्व है, और बताया गया है, कि जीवन में हमें बाधाएं या अड़चनें इसलिए आती रहती हैं, कि हम पूर्ण रूप से शुद्ध और पवित्र नहीं हैं।

नित्य सांसारिक व्यवहार करने से हमें तीन प्रकार के दोष व्याप्त होते हैं, १) वाणी दोष – हमें बोल-चाल में, बात-चीत में और व्यवहार में असत्य उच्चारण करना पड़ता है, उस झूठ की वजह से वाणी दोष व्याप्त होता है, २) मन दोष – हम चाहे अनचाहे किसी के प्रति घृणा, क्रोध या दुर्भावना व्याप्त करते हैं, उससे मनः दोष व्याप्त होता है, ३) मुख दोष – आज के युग में तो घर के बाहर कई स्थानों पर भोजन करना होता है, जहां शुद्धता पवित्रता का भान नहीं होता, ऐसी स्थिति में मुख दोष व्याप्त हो जाता है।

उपरोक्त तीनों दोषों को समाप्त करने के लिए शास्त्रों में एक मात्र अनन्त साधना का विधान ही बताया है, और यह भी कहा है, कि वर्ष में एक बार इस दिन अनन्त साधना संपन्न करने पर अब तक किये गये सभी दोष समाप्त हो जाते है।

और जब दोष समाप्त हो जाते हैं, तो व्यक्ति शुद्ध और चैतन्य हो जाता है, फलस्वरूप चेहरे पर तेजस्विता आ जाती है, उसके वाणी में दृढ़ता एवं स्पष्टता आ जाती हैं, और वह जीवन में सफलता की ओर अग्रसर होने लगता है।

इसके साथ ही साथ अनुभव में यह आया है, कि इस साधना को संपन्न करने पर तत्क्षण साधक की एक इच्छा तुरन्त पूरी होती ही है, वह इच्छा चाहे कितनी ही कठिन हो, और प्रयत्न करने पर भी सफल नहीं हो रही हो, कई बार तो साधना समाप्त होते होते अपने कार्य की पूर्ति के समाचार प्राप्त हो जाते हैं।

मेरे पिताजी अपने जीवन में प्रति वर्ष अनन्त चतुर्दशी साधना करते थे. और हर बार वे जो इच्छा व्यक्त करते, वह इच्छा उनकी अवश्य ही पूरी होती थी, यही नहीं अपितु वे अपने खर्चे पर आस पडोस के स्त्री पुरुषों को भी यह साधना इस दिन संपन्न कराते थे।

साधना रहस्य

साधक को चाहिए कि अनन्त चतुर्दशी के दिन (यह साधना दिन को ही संपन्न हो सकती है) साधक स्नान कर आसन बिछा कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जांय और सामने " सर्व कामना सिद्धि अनन्त यन्त्र " को स्थापित कर दें, यह यन्त्र एक बार घर में स्थापित होने

पर भविष्य में प्रति वर्ष यही यन्त्र, प्रयोग में आता रहता है, इस यन्त्र को किसी पात्र में स्थापित कर दें और फिर इस यन्त्र की संक्षिप्त पूजा करें, पूजा करते समय जल, कुंकुम, अक्षत या पुष्प आदि समर्पित करते समय "ॐ अनन्ताय नमः" शब्द का ही उच्चारण करता रहे।

संक्षिप्त पूजा में यन्त्र को पहले जल से स्नान करा ले, और फिर दूध से दही से घृत से शहद से और शक्कर से स्नान करा कर दूसरे पात्र में केसर से "ऐं ह्रीं श्रीं" लिख कर उस पर यन्त्र को स्थापित कर दें, और यन्त्र पर केसर का तिलक करें सामने अक्षत चढ़ावे और पुष्प समर्पित करें, इसके बाद साधक शुद्ध घृत का दीपक व अगरबत्ती लगावे।

इसके बाद साधक को चाहिए कि वह पहले से ही मंगा कर रखे गये शुद्ध यज्ञोपवित या जनेऊ को यन्त्र के सामने रख दें, शास्त्रों में विधान है, कि कुमारी कन्या सूत कात कर और उसका यज्ञोपवित बना कर प्रयोग करें, साधक यज्ञोपवित बाजार से प्राप्त कर सकते है, अथवा शुद्ध और प्रामाणिक यज्ञोपवित नि.शुल्क पत्रिका कार्यालय से मंगवा सकते हैं।

इस यज्ञोपवित को उस महायन्त्र के सामने स्थापित कर दें, और यज्ञोपवित में आवाहन करें कि यज्ञोपवित के प्रत्येक धागे में भगवान अनन्त आ कर स्थापित हों।

इसके बाद यज्ञोपवित के सिर पर जो तीन गांठें होती हैं, उन तीन गांठों के मूल में ब्रह्मा को स्थापित कर के आवाहन करें, मध्य में विष्णु को तथा सबसे ऊपरी गांठ पर भगवान शिव को आवाहन करें और उन्हें स्थापित करें फिर तीनों गांठों पर केसर लगावें तथा संक्षिप्त पूजन करें।

इसके बाद यज्ञोपवित को खोल कर दोनों हाथों में ले कर उसे आकाश की ओर ऊपर उठावे और "ॐ सूर्याय नमः" मन्त्र का सात बार उच्चारण कर उस यज्ञोपवित में सूर्य की तेजस्विता का आवाहन करें, और मन में यह चिन्तन करे कि इस यज्ञोपवित के प्रत्येक धागे में सूर्य स्थापित हो रहे हैं, जो कि मुझे पूर्ण तेजस्विता प्रदान करने में समर्थ हैं, साथ ही साथ भगवान सूर्य मेरे पूर्व जीवन के और इस जन्म के सभी पापों को समाप्त कर रहे हैं और साथ ही साथ जो तीन प्रकार के दोष व्याप्त होते हैं उन तीनों प्रकार के दोषों को भी भगवान सूर्य समाप्त कर मुझे पूर्ण चैतन्य और शुद्ध बना रहे हैं।

ऐसी भावना मन में रखते हुए यज्ञोपवित को नीचे उतार ले और फिर उसे समेट कर अनन्त यन्त्र के सामने स्थापित कर दें और उस यज्ञोपवित को भगवान अनन्त का स्वरूप मान कर उसकी संक्षिप्त पूजा करें, उन्हें नैवेद्य समर्पित करें और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें कि भगवान अनन्त मेरे जीवन की समस्त कामनाओं को पूर्ण करें और अमुक इच्छा को तो तुरन्त ही पूर्ण करें।

इसके बाद साधक निम्न मन्त्र की एक माला मन्त्र जप करें—

अनन्त मन्त्र

ॐ ऐं अनन्ताय ऐं नमः

जब एक माला मन्त्र जप पूरी हो जाय, तब भगवान की आरती करें, इसमें आपको जो भी आरती स्मरण हो, उस आरती को संपन्न कर सकते हैं।

उसके बाद उस यज्ञोपवित को गले में धारण कर ले और पुराना यज्ञोपवित उतार दें, कुछ साधक पुराना यज्ञोपवित गले में ही रहने देते हैं, और इस यज्ञोपवित को २४ घंटों के लिए दाहिनी भुजा पर बांध लेते हैं, इन दोनो में से किसी भी प्रकार का विधान साधक कर सकते हैं।

इस प्रकार का प्रयोग करने के बाद ही साधक अपने परिवार के साथ भोजन करे, और यथोचित, दान आदि दें।

वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त तेजस्वी और प्रभाव युक्त है, मैंने प्रति वर्ष इस प्रयोग को आजमाया है, और मुझे अनुभव हुआ है कि इससे मनोवांछित कामना सिद्धि तो निश्चय ही होती है।

सूक्ष्म शरीर से मन चाहे स्थान पर गतिशील होने के लिए

भुवनेश्वरी साधना

सिद्धाश्रम पञ्चांग के अनुसार १२-९-८९ अर्थात् भाद्रपद शुक्ल १२ मंगलवार को महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ भुवनेश्वरी जयन्ती दिवस है, जो कि अपने आप में एक महत्वपूर्ण पर्व है।

जो वास्तव में ही साधक हैं, जो साधनाओं की ऊंचाइयों पर पहुंचना चाहते हैं, जो अपने जीवन में कुछ करके दिखाना चाहते हैं, उनको इस दिन का उपयोग कर पूर्ण प्रामाणिकता के साथ भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

य पठेच्छृणुयाद्वापि स योगी नात्र संशयः
स्वच्छन्दमानसो भूत्वा स्तवमेतत्समुद्धरेत् ॥
स दीर्घायुः सुखी वाग्मी वाणी तस्य न संशयः ।
धनवान् गुणवानश्रीमान् धीमानीष गुरुप्रिये ॥
सर्व्वेषान्तु प्रियो भूत्वा पूजयेत्सर्व्वदा स्तवम् ।
मन्त्र सिद्धि कर स्थैव तस्य देवि न संशयः ।
कुवेरत्वम्भवेत्तस्य तस्याधीना हि सिद्धयः ॥
मृतपुत्रा च या नारी दौर्भाग्यपरिपीड़िता ।
धनधान्यविहीना च रोग शोकाकुला चया ॥
ताभिरेतन्महादेवि भूर्जपत्रे विलेखयेत् ।
सव्ये भुजे च वध्नीयात्सर्व्वसौख्यवती भवेत् ॥

शाक्त प्रमोद पृ. २१७

'शाक्त प्रमोद' तंत्र को प्रामाणिक और श्रेष्ठ ग्रन्थ है; और सभी विद्वानों ने यह स्वीकार किया है, कि शाक्त प्रमोद में पक्षपात रहित पूर्णता के साथ विवरण दिया हुआ है।

शाक्त प्रमोद के अनुसार जीवन की सर्वश्रेष्ठ और महत्वपूर्ण साधना भुवनेश्वरी साधना ही है, जीवन में अन्य साधनाएं कर सकें या न कर सकें, जीवन में अन्य महाविद्याओं को सिद्ध न कर सके, पर साधक को अपने जीवन में भुवनेश्वरी साधना तो अवश्य ही संपन्न करनी चाहिए।

उपरोक्त शाक्त प्रमोद के प्रामाणिक श्लोक के अनुसार इस दिवस पर भुवनेश्वरी साधना संपन्न करने पर निम्न लाभ निश्चय ही प्राप्त होते हैं—

१— इस साधना को संपन्न करने पर गृहस्थ व्यक्ति भी उसी प्रकार योगी कहला सकता है, जिस प्रकार भगवान श्री कृष्ण पूर्ण गृहस्थ और सोलह हजार रानियों के पति होते हुए भी योगीराज कहलाते थे।

२— इस साधना को सिद्ध करने पर निश्चय ही व्यक्ति में विशेष क्षमता आ जाती है और वह अपने शरीर को लघु रूप बना कर ससार में कहीं पर भी विचरण कर सकता हैं और वापिस अपने मूल आकार में आ सकता है, जिस प्रकार हनुमानजी ने लंका जाते समय अत्यन्त लघु रूप धारण कर लिया था, और समुद्र पार करने के बाद अपने मूल रूप में आ गये थे, यह इस साधना की सर्वश्रेष्ठ विशेषता है।

३— इस साधना को संपन्न करने पर व्यक्ति दीर्घायु, सुखी और वाणी सिद्ध हो जाता है, वह दूसरों को पूर्ण रूप से प्रभावित करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

४— ऐसा व्यक्ति धनवान तो होता ही है, साथ ही साथ अनेक गुणों से विभूषित हो कर अपने व्यापार को कई गुना बढ़ा देता है।

५— इस साधना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि दूसरे प्रकार में यह गुरू साधना ही है और इस साधना को संपन्न करने से स्वतः गुरू सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

६— इस साधना को संपन्न करने पर संसार में जितने भी मंत्र हों, उन मंत्रों में सिद्धि मिल जाती हैं, और वह कुबेर के समान धनवान, तथा सम्पत्तिवान बन जाता है।

७— यदि कोई स्त्री दुर्भाग्यशाली हो और उसके पुत्र नहीं हो, या पुत्र आज्ञाकारी न हो तो घर का कोई सदस्य इस साधना को संपन्न करता है, तो उसका दुःख समाप्त हो जाता है, और वह पुत्रवान बन जाती है।

८— इस साधना को सिद्ध करने से 'दस महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ भगवती भुवनेश्वरी सिद्ध हो जाती है। और उसके साक्षात् दर्शन संभव हो पाते हैं।

९— शास्त्रों में कहा गया है, कि भगवती भुवनेश्वरी आद्य शक्ति है, अतः इसे सिद्ध करने पर महाकाली, महालक्ष्मी और महाशक्ति तीनों महादेवियां स्वतः सिद्ध हो जाती हैं।

वस्तुतः भुवनेश्वरी–साधना जीवन की अनुपम और अद्वितीय साधना है, और शास्त्रों में भुवनेश्वरी साधना के बारे में जितना लिखा गया है उतना और किसी साधना के बारे में नहीं कहा गया है, समस्त तांत्रिकों योगियों और साधकों ने यह स्पष्ट रूप से बताया है, कि भुवनेश्वरी साधना ही जीवन की पूर्ण और प्रामाणिक साधना है।

मैं आगे के पृष्ठों में गोपनीय और परम दुर्लभ भुवनेश्वरी साधना रहस्य को स्पष्ट कर रहा हूं, इसका मंत्र अपने आप में अत्यन्त सरल है और कोई भी कम पढ़ा लिखा साधक भी इस साधना को संपन्न कर सकता है।

साधक प्रातः काल उठ कर स्नान कर सफेद वस्त्र धारण कर स्वयं या अपनी पत्नी के साथ पूजा स्थान में बैठ जाय और अपने सामने "त्रैलोक्य मोहन भुवनेश्वरी यन्त्र" को स्थापित कर दें, यह अपने आप में दुर्लभ और अद्वितीय यन्त्र है जिसकी साधकों ने अत्यधिक प्रशंसा की है, इस यंत्र का निर्माण जटिल है, परन्तु

पत्रिका ने बहुत ही कम इस अवसर पर इस प्रकार के यन्त्रों का निर्माण कराया है, जिससे कि साधक ऐसा दुर्लभ यन्त्र अपने घर में स्थापित कर सके, शास्त्र में तो यन्त्र निर्माण के बारे में कहा गया है कि यह यन्त्र जटिल है, कठिन है, और सौभाग्यशाली व्यक्तियों के घर में ही ऐसा यन्त्र स्थापित हो सकता है, इसके बारे में बताया है –

पद्ममष्टदलम्बाह्ये वृत्तं षोडशभिर्द्दलेः
विलिखेत्वकर्णिकामध्ये षट्कोणमतिसुन्दरम्
चतुरस्त्रश्चतुद्द्वारमेवम्मण्डलमालिखेत्

उपरोक्त पंक्तियों को पढ़ कर आप अनुमान लगा सकेंगे, कि इस यन्त्र का निर्माण कितना अधिक जटिल और कठिन है, इसके साथ ही साथ भगवती भुवनेश्वरी का प्रामाणिक चित्र भी अपने पूजा स्थान में इस दिन स्थापित कर देना चाहिए।

इसके बाद यन्त्र को शुद्ध जल से धो कर पोंछे और किसी दूसरे पात्र में केसर से "ह्रीं" अक्षर लिख कर उस पर यन्त्र को स्थापित करें, यन्त्र को उस पात्र में रख कर उसके चारों कोनों पर भी 'ह्रीं' अंकित करें, और फिर साधक उसकी प्राण प्रतिष्ठा करें।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हौं हंसः मम शरीरे अमुक देवतायाः प्राणाः इह प्राणाः, जीव इह स्थितः, सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि, वाक्-मनश्चक्षुः-श्रोत्र-जिह्वा प्राण पाद पायूपस्थानि इहेवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ऐसा करने के बाद तांत्रोक्त रूप से भुवनेश्वरी सिद्ध करने के लिए अपने आसन का शोधन करें, आसन के नीचे जो भूमि है, उस भूमि को दाहिने हाथ से छू कर यह मन्त्र पढ़ें –

ॐ पवित्र-वज्र-भूमे! हुं फट् स्वाहा।

इसके बाद भूमि को मन्त्र सिद्ध करने के बाद भूमि पर जल अक्षत चढ़ा कर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसका पूजन करें –

ॐ आधार-शक्त्यै नमः जलाक्षत-चन्दनं समर्पयामि ॥

आधार शक्ति अर्थात भूमि की पूजा करने के बाद आसन का शोधन करे, इसके लिए पहले दाहिने हाथ में जल ले कर निम्न मंत्र पढ़ता हुआ जल जमीन पर छोड़ दें।

ॐ अस्य आसन शोधन मन्त्रस्य श्री मेरू-पृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनोपवेशने विनियोगः।

विनियोग करने के बाद आसन के ऊपर दाहिना हाथ रख कर नीचे लिखा हुआ मन्त्र उच्चारण करें –

ॐ पृथ्वी! त्वया धृता लोका, देवि! त्वं विष्णुना धृता त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरू आसनम् ॥

इसके बाद अपने दाहिनी ओर चावलों की ढ़ेरी बना कर उस पर एक सुपारी रखें और कुंकुम का तिलक करें, उसे भैरव मान कर उसके सामने गुड़ का भोग लगावे, और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें कि वे निरन्तर साधक की रक्षा करते हुए सभी विघ्नों का नाश करें –

ह्रीं तीक्ष्ण-दंष्ट्र! महाकाय! कल्पान्त दहनोपम! भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

ऐसा करने के बाद साधक अपना रक्षा विधान निम्न प्रकार से करें –

१– तीन बार दोनों हाथों की हथेली से आवाज करते हुए "फट्" शब्द का उचारण करें और बांये पैर की

ऐड़ी से तीन बार भूमि पर प्रहार करें या दूसरे शब्दों में भूमि का ताड़न करें, इससे भूमि पर होने वाले विघ्नों का निवारण होता है।

२– तीन बार 'फट्' बोलने के बाद दोनों हाथ भूमि पर रख कर ही शब्द का उच्चारण करें और फिर अपने दोनों हाथ ऊपर उठा कर आकाश की ओर एक टक दृष्टि से देख कर 'फट्' शब्द का उच्चारण करें, इससे भूमि पर तथा अन्तरिक्ष से होने वाले विघ्नों का नाश होता है।

रक्षा विधान

फिर समस्त विघ्नों का नाश कर अपनी रक्षा का विधान करें और इसके लिए अपने चारों ओर लोहे की कील से गोल घेरा बना दें, घेरा बनाते समय निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

ॐ रं अग्नि प्राकाराय नमः

इसका तात्पर्य यह है कि अब साधक सभी प्रकार से सुरक्षित है और उसके चारों ओर अग्नि की दीवार बनी हुई है।

इसके बाद साधक भगवान गणपति को अन्य पात्र में स्थापित कर उनका संक्षिप्त पूजन करें, यदि घर में गणपति की मूर्ति या गणपति का चित्र हो तो उसका भली प्रकार से पूजन करें, और यदि न हो तो गोल सुपारी पर मौली बांध कर उन्हें गणपति मान कर स्थापना कर दें, और उनकी पूर्ण पूजा करें, पूर्ण पूजा में जल से स्नान करा कर कुंकुम अक्षत लगा कर नैवेद्य चढ़ावे और प्रार्थना करें।

इसके बाद साधक को चाहिए कि अपने सामने अपने गुरू की मूर्ति या गुरू का चित्र स्थापित करें, और उनकी पूर्ण पूजा करें, पूजन करते समय प्रत्येक वस्तु समर्पित करते समय "ॐ गुं गुरूभ्यो नमः" का उच्चारण करता रहे।

तत्पश्चात साधक अपने सिर के भीतर स्थित सहस्र दल कमल के बीच में गुरू का चिन्तन करते हुए, उनका निम्न प्रकार से ध्यान करें –

ध्यान

सहस्र दल पङ्कजे सकल शीत रश्मि प्रभम्।
वराभय कराम्बुजं विमल गन्ध पुष्पाम्बरम्॥
प्रसन्न वदनेक्षणं सकल देवता रूपिणम्।
स्मरेत् शिरसि हंसगं तदभिधान पूर्वं गुरूम्॥
ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञान मूर्तिम्।
द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्वमस्यादिलक्षम्॥
एकं नित्यं विमलमचलं सर्व धी साक्षि भूतम्।
भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्-गुरूं तं नमामि॥
हंसो हंस गुरूः श्रेष्ठः सुखानन्दः सुखात्मनः।
तस्य स्मरण मात्रेण मुक्तिस्तत्र न संशयः॥

इस प्रकार गुरूदेव का पूरा ध्यान कर साधक स्वगुरू, परम गुरू, परापर गुरू और परमेष्ठि गुरू का नाम ले कर पूजन करें, अपने सामने एक पात्र में गंगा जल या शुद्ध जल ले कर रख दें, फिर गुरूदेव के चित्र के सामने ही जल, अक्षत, कुंकुम, पुष्प आदि समर्पित करते हुए उच्चारण करें–

स्वगुरू निखिलेश्वरानन्दाय श्री पादुकां पूजयामि
नमः समर्पयामि नमः।
परम गुरू सच्चिदानन्दाय श्री पादुकां पूजयामि
नमः तर्पयामि नमः।
परापर गुरू वेदव्यासाय श्री पादुकां पूजयामि
नमः तर्पयामि नमः।
परमेष्ठि गुरू ब्रह्माय श्री पादुकां पूजयामि नमः
तर्पयामि नमः।

इस प्रकार गुरूदेव को स्मरण कर पञ्चोपचार से पूजन करें और फिर गुरूदेव का मानसिक पूजन निम्न प्रकार से करें –

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः ।
हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः ।
यं वायवात्मकं धूपं आघ्रापयामि नमः ।
रं बह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः ।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः ।
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः ।

माला पूजन

इस प्रकार गुरू पूजन कर अपने हाथ में स्फटिक माला ले कर नीचे लिखे मन्त्र से उसको प्रणाम करें —

माले माले महा-माले सर्व-शक्ति स्वरूपिणि ।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तः तस्मान्मे सिद्धदा भव ।।

माला को प्रणाम करने के बाद गन्ध, अक्षत, पुष्प से निम्न मन्त्र पढ़ता हुए माला का पूजन करें —

मां माले ! सर्व-देवानां प्रीतिदा शुभदा भव ।
शुभं कुरूष्व मे भद्रे ! यशो वीर्यं च सर्वदा ।।

इसके बाद माला को दाहिने हाथ में ले कर ध्यान करें कि वह माला साधना में सिद्धि प्रदान करे —

गुह्याति गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत् प्रसादान्महेश्वरि ।।

अमृत पान

फिर साधक अपने सामने जो जल का कलश रखा हुआ है, उसका संक्षिप्त पूजन करें, और उसमें से थोड़ा थोड़ा जल ले कर स्वगुरू, परमगुरू, परापर गुरू और परमेष्ठि गुरू पर चढ़ावे और फिर उसी जल से निम्न मंत्र पढ़ता हुआ ग्यारह बार आचमन लें -

अमृत पान मन्त्र

ह्रीं श्रीं शिव शक्ति सदाशिवेश्वर-विद्या कलात्मने अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः ऐं (मूलं) आत्म तत्वेन स्थूल देहं शोधयामि स्वाहा ।

इसके बाद किसी कटोरी में उस अमृत कलश का जल ले कर निम्न मन्त्र पढ़ता हुआ तीन बार अमृतपान करें —

ह्रीं श्रीं माया कला विद्या राग काल नियति पुरूषात्मने कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं क्लीं (मूलं) विद्या तत्वेन सूक्ष्म देहं शोधयामि स्वाहा ।

दूसरी बार अमृत पान मन्त्र

ह्रीं श्रीं प्रकृत्यहंकार बुद्धि-मनः श्रोत्र-त्वक् चक्षुर्जिह्वा-घ्राण-वाक्पाणि - पादपायूपस्थ शब्द स्पर्श-रूप-रस गन्धाकाश वायवग्नि सलिल-भूम्यात्मने यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं सौः (मूलं) शिव तत्वेन पर - देहं शोधयामि स्वाहा ।

तीसरी बार अमृतपान मन्त्र

ह्रीं श्रीं शिव शक्ति सदाशिवेश्वर विद्या कलात्मने माया कला विद्या राग काल-नियति पुरूषात्मने प्रकृत्यहंकार बुद्धि-मनः श्रोत्र-त्वक् चक्षुर्जिह्वा घ्राण वाक् पाणि पाद पायूपस्थ शब्द स्पर्श-रूप-रस गन्धाकाश वायवग्नि सलिल भूम्यात्मने अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ऐं क्लीं सौः (मूलं) सर्व-तत्वेन तत्व त्र्यान्वितं बीजं शोधयामि स्वाहा ।

ऐसा करने पर साधक साधना के लिए सिद्ध होता है, और इसके बाद जो भी साधना की जाती है, वह पूर्ण रूप से सिद्ध होती है ।

भुवनेश्वरी प्रयोग

अपने सामने जो दुर्लभ भुवनेश्वरी यंत्र रखा है, और जो सामने भुवनेश्वरी चित्र स्थापित किया है, उसके सामने साधक निम्न प्रकार से विनियोग, न्यास एवं ध्यान करें —

विनियोग

ॐ अस्य श्री भुवनेश्वरी हृदय स्तोत्रस्य श्री शक्तिः ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्री भुवनेश्वरी देवता। हं बीजं। ईं शक्तिः। रं कीलकं। सकल-मनोवांछित-सिद्धयर्थं पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

श्री शक्ति ऋषये नमः शिरसि।
गायत्री छन्दसे नमः मुखे।
श्री भुवनेश्वरी देवतायै नमः हृदि।
हं बीजाय नमः गुह्ये।
ईं शक्तये नमः नाभौ।
रं कीलकाय नमः पादयोः।
सकल-मनोवांछित सिद्धयर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

षडंग न्यास	अंग न्यास	कर न्यास
ह्रीं श्रीं ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
,,	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
,,	मध्यमाभ्यां वषट	शिखायै वषट
,,	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
,,	कनिष्ठिकाभ्यां वौंषट	नेत्र त्रयाय वौषट
,,	करतल करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

इस प्रकार न्यास करने के बाद साधक दोनों हाथ जोड़ कर भगवती भुवनेश्वरीं का ध्यान करें —

भुवनेश्वरी ध्यान

सरोजनयनां चलत् कनक कुण्डलां शैशवीं,
धनुर्जप वटी करामुदित सूर्य कोटि प्रभाम्।
शशांक कृत शेखरां शव शरीर संस्था शिवाम्,
प्रातः स्मरामि भुवनेश्वरीं शत्रु गति स्तम्भनीम्॥

ध्यान करने के बाद साधक स्फटिक माला से मंत्र जप प्रारम्भ करें, पर मंत्र जप से पूर्व भुवनेश्वरी महायंत्र के सामने शुद्ध घृत का दीपक और अगरबत्ती लगा लें।

इसके बाद शान्त मनोयोग पूर्वक भुवनेश्वरी बीज मंत्र का जप करें, यह मन्त्र एक अक्षर का है, और शास्त्रों के विधान के अनुसार यदि भुवनेश्वरी साधना दिवस के दिन इस मन्त्र की १०८ माला मन्त्र जप हो जाता है, तो निश्चय ही भुवनेश्वरी सिद्ध हो जाती है।

पढ़ने में १०८ माला बड़ी लगती है, एक वर्ण का मंत्र होने के कारण इस पूरे मन्त्र जप एवं साधना में चार या पांच घण्टे से ज्यादा समय नहीं लगता।

भुवनेश्वरी मूल मन्त्र

"ह्रीं"

उपरोक्त मन्त्र अपने आप में सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय मन्त्र है, इस मन्त्र को चैतन्य करने के लिए इस मंत्र से पहले पांच बार गुरु मत्र उच्चारण और वाद में भी गुरु मंत्र उच्चारण कर ले, यह सिर्फ एक बार किया जाता है, उसके बाद मंत्र जप प्रारम्भ कर दें।

जब मन्त्र जप संपन्न हो रहा हो, और बीच में ही भगवती भुवनेश्वरी विग्रह के साक्षात् दर्शन सुलभ हो, तो साधक विचलित न हो और जप माला पूरी हो जाय, तब दोनों हाथ जोड़ कर भक्ति भाव से भगवती भुवनेश्वरी के दर्शन कर ले, और प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त करें, कि वह सिद्ध हो और साधक के जीवन के सारे मनोरथ पूर्ण करे।

७-९-८९

स्वर्णाकर्षण गुटिका का प्रयोग कीजिये

अष्ट सिद्धि लक्ष्मी जयन्ती

के अवसर पर

सिद्धाश्रम पंचाग के अनुसार इस वर्ष ७-९-८९ तद्नुसार भाद्रपद शुक्ल सप्तमी गुरूवार को 'अष्टसिद्धि लक्ष्मी जयन्ती' है, तांत्रिक ग्रन्थों में खास तौर से यह बताया गया है, कि अष्ट सिद्धि लक्ष्मी जयन्ती जैसे दुर्लभ अवसर पर यदि स्वर्णाकर्षण गुटिका का प्रयोग सम्पन्न किया जाय तो साधक को आश्चर्यजनक सफलता व सिद्धि प्राप्त होती है।

इस वर्ष ७-९-८९ को यह महत्वपूर्ण अवसर आ रहा है. और साधकों के लिए यह स्वर्णिम अवसर है, जिस दिन वे इस आश्चर्यजनक गुटिका पर प्रयोग कर कार्य सिद्ध कर सकते है।

अष्ट सिद्धि लक्ष्मी जयन्ती का मांत्रिक और तांत्रिक ग्रन्थों में विशेष महत्व है, और साधक पूरे वर्ष भर इस दिन की प्रतीक्षा करते है, कि जब वे परम दुर्लभ इस प्रयोग को सम्पन्न कर निश्चित सफलता और अनुकूलता प्राप्त करते है।

यों तो इस महत्वपूर्ण पर्व पर कई प्रकार की साधना एवं सिद्धियां सम्पन्न की जाती है, तांत्रिक ग्रन्थों में बताया है, कि इस तिथि पर सम्पन्न किया हुआ कार्य पूर्ण रूप से सिद्ध होता ही है, परन्तु मैंने पूरे जीवन में इस पर्व पर कई प्रकार के तांत्रिक मांत्रिक प्रयोग सम्पन्न

किये है, और यह अनुभव किया है, कि यदि इस तिथि के अवसर पर स्वर्णाकर्षण 'गुटिका से संबंधित प्रयोग सम्पन्न किये जांय तो अचूक फल प्राप्ति और अद्‌भुत सफलता प्राप्त होती है ।

स्वर्णाकर्षण गुटिका क्या है

प्रकृति की तरफ से मानव को वरदान स्वरूप यह गुटिका है, जो कि अपने आप में ही पूर्ण सिद्धिप्रद है जिस प्रकार सियार सिंगी रूद्राक्ष माला, एक मुखी रूद्राक्ष आदि का साधनाओं में विशेष महत्व है, उसी प्रकार इस गुटिका का भी विशेष महत्व है ।

यह गुटिका सामान्य रूप से साधु सन्यासियों के पास प्राप्त हो जाती हैं, परन्तु यह दुर्लभ वस्तु है, और जिसके घर में यह स्वर्णाकर्षण गुटिका होती है, उसके घर में निरन्तर सभी दृष्टियों से उन्नति होती रहती है, वस्तुतः यह गुटिका धन धान्य समृद्धि आदि देने में पूर्णतः सफल है ।

यह गुटिका मन्त्र सिद्ध चैतन्य प्राण प्रतिष्ठा युक्त होनी चाहिए, तभी यह गुटिका विशेष अनुकूल फल प्रदान कर सकती है, सामान्य स्तर की गुटिका घर में सुख और सौभाग्य तो देती हैं, परन्तु यदि इस पर विशेष प्रयोग सम्पन्न करना हो तो मन्त्र सिद्ध चैतन्य प्राण प्रतिष्ठा युक्त स्वर्णाकर्षण गुटिका ही होनी चाहिए ।

मेरे जीवन के हजारों अनुभवों में से मैं इस विशेष पर्व के अवसर पर चार महत्वपूर्ण प्रयोग स्पष्ट कर रहा हूँ, जों कि मेरे आजमाये हुए हैं, और जिसके माध्यम से मुझे हर बार सफलता प्राप्त हुई है ।

१. गृहस्थ प्रयोग

(अ) कन्या के शीघ्र विवाह के लिये
(आ) पुत्र के लिए योग्य बहू प्राप्ति के लिए
(इ) पति-पत्नी में मधुरता के लिए
(ई) इच्छित सम्बन्ध बढ़ाने के लिए
(उ) वशीकरण प्रयोग के लिए ।

सामग्री

स्वर्णाकर्षण गुटिका (मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त) मूंगे की माला, अगरबत्ती, दीपक, जलपात्र ।

अवधि

दो घण्टे ।

तिथि

७-९-८९

प्रयोग विधि

जो साधक या साधिका इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहे, वह इस दिन किसी समय स्वर्णाकर्षण गुटिका को शुद्ध जल से धोकर किसी ताम्बे के पात्र में चावलों की ढेरी बनाकर उस पर स्वर्णाकर्षण गुटिका रख दे, और उस पर केशर का तिलक व पुष्प चढ़ा दे, सामने दूध का बना प्रसाद रखे और फिर नीचे लिखे मन्त्र का जप मूंगे की माला से करे ।

मंत्र जप करने से पूर्व हाथ में जल लेकर संकल्प करे कि मैं अमुक कार्य की सिद्धि के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूँ ।

मन्त्र

ॐ वैचाक्षी कामरूपाय कामदेव्यै इच्छित कार्य सिद्धि करि करि यं रं ऐं ह्रीं फट् स्वाहा ।

इसमें मंत्र जप संख्या निर्धारित नहीं है, केवल दो घण्टे मन्त्र जप करना चाहिए, इसके बाद स्वर्णाकर्षण गुटिका को उठाकर किसी अच्छे स्थान पर रख देनी चाहिए, ऐसा करने पर शीघ्र ही साधक को सफलता मिलती है ।

२. लक्ष्मी प्राप्ति के प्रयोग

इस प्रयोग के अन्तर्गत निम्न प्रकार के कार्यो की सिद्धि प्राप्त की जा सकती है—

(अ) नया व्यापार प्रारम्भ करने व अनुकूलता प्राप्ति के लिए
(आ) व्यापार में आश्चर्यजनक प्रगति के लिए
(इ) आर्थिक उन्नति के लिए
(ई) आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए

सामग्री

स्वर्णाकर्षण गुटिका, कमल गट्टे की माला, अगर-बत्ती, दीपक, केशर, जलपात्र।

अवधि

दो घण्टे।

तिथि

७–९–८९ (इसके लिए दिन के ११ बजे से १ बजे तक का समय सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है)

प्रयोग विधि

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए साधक पीली धोती पहनकर उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके बैठ जाय सामने लाल वस्त्र बिछाकर उस पर आठ चावलों की ढेरियां बनावे, और एक बड़ी ढेरी आगे बना दे, फिर इस पर स्वर्णाकर्षण गुटिका रख दे, इसके बाद उस पर केसर का तिलक करे और कमल गट्टे की माला से मात्र दो घण्टे निम्न मन्त्र का जप करे।

मन्त्र

ॐ ह्रीं धनधान्यादिपतये स्वर्णाकर्षण कुबेराय समृद्धि देहि दापय स्वाहा।

मन्त्र जप करने से पूर्व हाथ में जल लेकर संकल्प करे कि अमुक व्यापार या अमुक कार्य के लिए और उसमें पूर्ण सफलता के लिए यह प्रयोग इस विशेष तिथि व मुहूर्त के अवसर पर सम्पन्न कर रहा हूं, जिसमें मुझे पूर्ण सफलता मिले।

दो घण्टे मंत्र जप करने के बाद उन चावलों की ढेरियों के साथ उस स्वर्णाकर्षण गुटिका को उसी कपड़े में बांध कर घर के किसी महत्वपूर्ण स्थान पर रख दे, ऐसा करने पर उसे शीघ्र ही मनोवांछित सफलता प्राप्त हो जाती है।

शत्रु स्तम्भन प्रयोग

इस प्रयोग के अन्तर्गत पांच प्रकार के कार्यो में सफलता प्राप्त की जा सकती है।

(अ) शत्रु की गति-मति बांधने के लिए
(आ) शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए
(इ) मुकदमे में सफलता प्राप्ति के लिए
(ई) शत्रुओं को अपने अनुकूल बनाने के लिए
(उ) किसी भी प्रकार के राज्य कार्य में सफलता प्राप्ति के लिए

सामग्री

स्वर्णाकर्षण गुटिका, मूंगे की या हकीक की माला अगरबत्ती, दीपक, जलपात्र।

अवधि

दो घण्टे, दिन के किसी भी समय।

तिथि

७–९–८९

प्रयोग विधि

जो साधक इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहते हैं,

वह मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त चैतन्य स्वर्णाकर्षण गुटिका को जल से धोकर किसी पात्र में गन्धक की ढेरी बनाकर उस पर रख दे और सामने गुड़ का प्रसाद चढ़ावे, फिर हाथ में जल लेकर संकल्प ले कि मैं अमुक शत्रु की बुद्धि नष्ट करने के लिए या अमुक मुकदमे में सफलता के लिए या अमुक कार्य की सिद्धि के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं जिसमें मुझे शीघ्र और पूर्ण सफलता मिले।

मन्त्र

ॐ क्रीं कालिकायै काय सिद्धि देवी मम कार्य सिद्धि करि करि क्रीं क्रीं क्रीं हुं फट्।

यह प्रयोग मात्र दो घण्टे का है, और प्रयोग सम्पन्न करने के बाद गुटिका को घर के किसी सुरक्षित स्थान पर रख दे, और गंधक को जला दे, ऐसा करने पर शत्रु की बुद्धि गति मति बध जाती है, और उसे अपने इच्छित कार्य में सफलता प्राप्त होती है।

इस प्रयोग को किसी की हानी पहुंचाने या द्वेष वश सम्पन्न नहीं करना चाहिए, केवल आत्म रक्षार्थ ही प्रयोग करना चाहिए।

४. तंत्र नष्ट प्रयोग

इस प्रयोग के अन्तर्गत तीन प्रकार के कार्यों की सिद्धि प्राप्त की जा सकती है।

(अ) स्वयं पर या परिवार के किसी सदस्य पर कोई तांत्रिक प्रयोग या टोना-टोटका हो तो उसे दूर करने के लिए

(आ) व्यापार पर या जीवन के अन्य किसी भी कार्य पर किसी ने जादू टोना कर दिया हो तो उसे नष्ट करने के लिए

(इ) भूत प्रेत, पिशाच आदि भगाने के लिए।

सामग्री

स्वर्णाकर्षण गुटिका, मूंगे की माला, लोबान, धूप, जल पात्र।

अवधि

दो घंटे

तिथि

७-३-८९

प्रयोग

जो साधक या साधिका इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहें, वह इस दिन किसी समय स्वर्णाकर्षण गुटिका को मिट्टी के कुल्हड़ में रख कर उसे पीली सरसों या काली मिर्च से ढ़क दे अर्थात् उस कुल्हड़ में नीचे स्वर्णाकर्षण गुटिका रख कर उस पर लगभग सौ ग्राम काली मिर्च या सरसों डाल दे, और फिर हाथ में जल लेकर यह संकल्प ले कि मैं अमुक कार्य की सिद्धि के लिए इस प्रयोग को सम्पन्न कर रहा हूं इसके बाद निम्न मन्त्र का जप दो घण्टे करे—

मन्त्र

ॐ क्लीं क्रीं हुं मम इच्छित कार्य सिद्धि करि करि हुं क्रीं क्लीं फट्

दो घण्टे मन्त्र जप होने के बाद उसी दिन रात्रि को इस कुल्हड़ को काली मिर्च (या सरसों) व स्वर्णाकर्षण गुटिका सहित कहीं पर जमीन में गाड़ दे, ऐसा करने पर शीघ्र ही उसे इच्छित सफलता प्राप्त हो जाती है।

ऊपर मैंने इस अवसर पर चार महत्वपूर्ण प्रयोग दिये हैं, जो कि मेरे अनुभूत हैं, और कार्य सिद्धि में पूर्ण रूप से सहायक है, यदि साधक या साधिका पूर्ण निष्ठा और श्रद्धा के साथ साधना करे तो अवश्य ही उसे सफलता प्राप्त होती है।

卐

जो १६-६-८६ से प्रारम्भ हो रहा है

पूर्वजों के प्रति श्रद्धांजलि

श्राद्ध

भारत की सभ्यता और संस्कृति सर्वाधिक प्राचीन है, इसका महत्व इस दृष्टि से भी है कि यहां जीवित व्यक्तियों में परस्पर स्नेह अपनत्व और आदर की भावना है, वहीं अपने मृतक पूर्वजों के प्रति भी हम श्रद्धानत रहते है, और उन्हें सम्मान प्रदान करते है, इसीलिए भारतीय धर्मशास्त्रों में वर्ष में पन्द्रह दिन उन पूर्वजों के लिए सुरक्षित रख छोड़ें है, जिन्होने हमें पैदा किया हमारा पालन पोषण किया हमारी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बने और अपने रक्त को देकर भी हमें सक्षम और योग्य बनाया इसीलिए उनके प्रति श्रद्धा और सम्मान व्यक्त करना हमारा परम पावन कर्तव्य कहा जाता है।

आश्विन महीने की प्रतिपदा से अमावस्या तक के दिन श्राद्ध कहलाते है, धर्म ग्रन्थों में यह मान्यता है कि एक पीढ़ी पहले के पूर्वजों के प्रति हम श्रद्धानत हों, उन्हें स्मरण करे और उनके प्रति कृतज्ञ बने।

इसलिए मां बाप या बड़ा भाई या ऐसे ही पूर्वज जिनका देहान्त हो गया है, उनका श्राद्ध पुत्र का प्रथम कर्तव्य है, किसी महीने की जिस तिथि को माता या पिता का देहान्त हुआ हो उसी तिथि को उसका श्राद्ध किया जाता है।

श्राद्ध के दिन हम शुद्ध पवित्र होकर भोजन बनावें और यथायोग्य एक ब्राह्मण या एक से अधिक ब्राह्मणों को बुलाकर भोजन करावें यदि यह संभव न हो तो कुंवारी कन्याओं को बुलाकर भोजन करावे, और पूर्वजों के प्रति श्रद्धांजली व्यक्त करें कि हम आपको भूले नहीं है, हमारे शरीर में आपका रक्त प्रवहित है, और आपकी ही कृपा से हम पृथ्वी पर जन्म लेकर सुख भोग सके है, इसके लिए हम आज के दिन आपके प्रति विशेष रूप से कृतज्ञ है।

शास्त्र विधि

धीरे-धीरे हम शास्त्र मर्यादा भूल रहे है और यह भी भूल गये है, कि हमारे पूर्वज किस प्रकार के श्राद्ध कार्य संपन्न करते थे। उनकी एक निश्चित विधि थी, और उस विधि का पालन करना शास्त्र मर्यादा कही जाती है।

भोजन बना लेने के बाद घर के मुखिया को हाथ में जल या कुशा लेकर निम्न संकल्प बोलना चाहिए।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु: श्रीमदभगवतो महा-पुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मण: द्वितीये परार्धे श्री श्वेतावाराह कल्पे वैवस्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे जम्बूद्वीपे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे श्रीमन्नृपविक्रमराज्यातीतसवत्सरे संवत द्विसहस्राधिक — तमे वर्षे अमुक नामसंवत्सरे अमुक ऋतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक वासरे अमुक तिथौ एव ग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्य तिथौ ममाऽमन: श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं (अपसव्यं दक्षिणाभिमुख:) अमुक गोत्राणां अमुक कानां तथा च अमुक गोत्राणामस्मन्मातामह-प्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकाना वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां, जन्मजन्मान्तरे क्षुधातृषादिदोष-परिहारार्थ पितृलोके अक्षयसुख स्वलोके सदगति-प्राप्त्यर्थ तद्दिनिमित्त यथन्संख्यं ब्राह्मणान् श्राद्ध-भोजनेनाहं तर्पयिष्ये ।

इसके बाद भगवान विष्णु की थाली बनावे और उसमें जो कुछ भी भोजन पकाया हो, वह रखे तथा उस पर तुलसी दल चढ़ावे, तत्पश्चात धेनु मुद्रा प्रदर्शित करते हुए निम्न मन्त्र से भगवान विष्णु का भोग लगावे ।

ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष (गूं) शीर्ष्णो द्यो: समवर्तत । पदम्याम्भूमिर्दिश: श्रोत्रात्तथा लोकां । अकल्पयन् ।

श्राद्ध में यह नियम है कि पांच स्थानों पर थोड़ा-थोड़ा भोजन रखे, जिसे 'पंच-ग्रास' कहा जाता है और निम्न मन्त्र बोलते हुए प्रत्येक ग्रास पर जल चढ़ावे ।

१- गौ ग्रास समर्पण
२- श्वान ग्रास समर्पण
३- काग ग्रास
४- कीट ग्रास
५- अतिथि ग्रास

इसके बाद थोड़ा सा भोजन ब्राह्मणों के बांई और रख कर सर्प ग्रास निम्न मन्त्र से दे ।

नागवलीं सर्पेभ्यो नम:

ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेस्यो ये के च पृथिवीमनु ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्य: सर्प्पेभ्यो नम: ।।

इसके बाद अग्नि को पकी हुई सामग्री और घृत का भोग निम्न मन्त्र से दें ।

ॐ चत्वारि श्रृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां आ विवेश ।

इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प भर निम्न मंत्र को पढ़ता हुआ छोड़े, यहां पर अमुक शब्द के स्थान पर अपने उस पूर्वज का नाम ले, जिसके प्रति श्राद्ध व्यक्त किया गया है ।

इहाद्य संकल्पिततिथौ (अपसव्यं) मम अमुक शर्मन् पितृणां तृप्त्यर्थं ब्राह्मणा: ! अद्य कृतसंकल्प-सिद्धिरस्तु । (जल छोड़े) ।

इसके बाद ब्रह्मार्पण कार्य सम्पन्न करे अर्थात हाथ में जल लेकर मन्त्र पढ़ता हुआ 'ब्रह्मार्पण' कहे ।

ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ।

ॐ तत् सत् ब्रह्मर्पणमस्तु । जल छोड़े और नमस्कार करके कहे । 'ब्राह्मणों आरोगो ।'

शास्त्रों की मर्यादा के अनुसार यह कार्य सम्पन्न होने के बाद ब्राह्मणों को चाहिए कि वे निम्न क्रिया सम्पन्न करे, अर्थात ब्राह्मण भोजन प्रारम्भ करने से पूर्व निम्न मन्त्र से चोटी की गांठ खोल दे (श्राद्ध भोजन करते समय चोटी खोल देनी चाहिए) ।

ब्रह्मापशसहस्राणि रुद्रशूलशतानि च ।
विष्णुचक्रसहस्राणि शिखामुक्तिं करोम्यहम् ।।

फिर ब्राह्मण तीन ग्रास भूमि पर रखे और निम्न मन्त्र का उच्चारण करे।

ॐ भूपतये नमः स्वाहा। ॐ भुवनपतये नमः स्वाहा। ॐ भूतानांपतये नमः स्वाहा।

तत्पश्चात हाथ में जल लेकर भोजन की थाली के चारों ओर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए जल प्रदक्षिणा दे।

अन्नं ब्रह्म रसो विष्णुर्भोक्ता देवो महेश्वरः।
एवं ध्यात्वा द्विजो भुक्ते सोऽन्नदोषैर्न लिप्यते॥
अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः।
त्वं ब्रह्म त्वं यज्ञस्त्वं वषटकारस्त्वमोङ्कारस्त्वं
विष्णोः परम पदम्॥

तत्पश्चात निम्न प्रत्येक मन्त्र के साथ पांच छोटे-छोटे ग्रास क्रम से अपने मुंह में डाले।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

फिर बायें हाथ से आंखों में जल स्पर्श करे।

इसके पश्चात ब्राह्मण भोजन करे और मृतक व्यक्ति को श्रद्धांजली व्यक्त करे कि उसकी आत्मा को शांति मिले और उसको मुक्ति हो।

इस प्रकार श्राद्ध कार्य सम्पन्न होता है, यद्यपि धीरे-धीरे हम यह सारी विधियां भूलते जा रहे हैं, परन्तु शास्त्र मर्यादा को खो देना उचित नहीं है, शास्त्र मर्यादा का पालन करना प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य होता है।

श्राद्धःइस वर्ष

शास्त्रों में प्रमाण है, कि पूरे वर्ष में किसी भी महीने में जिस तिथि को अपने पिता, बड़ा भाई, आदि की मृत्यु होती है, आश्विन कृष्ण पक्ष की उसी तिथि को उस व्यक्ति का श्राद्ध किया जाता है।

शास्त्रों में प्रमाण है, कि व्यक्ति पिता की मृत्यु हो गई हो तो पिता का श्राद्ध करे, यदि पिता जीवित हो तो अपने दादा का श्राद्ध करें। तात्पर्य यह है कि एक पीढ़ी पहले का श्राद्ध करने का ही प्रमाण है।

अपनी माता की मृत्यु हो गई हो तो उसका श्राद्ध उसकी मृत्यु तिथि पर न हो कर केवल नवमी अर्थात उनका श्राद्ध इस वर्ष २३-९-८९ को ही होगा।

विवाहित पुत्री या बहिन का श्राद्ध का विधान उनके ससुराल वाले ही करें, ठीक इसी प्रकार जिन बालकों की मृत्यु हो गई हो, और यदि उनका यज्ञोपवित संस्कार नहीं हुआ था, तो उसका श्राद्ध नहीं किया जाता है।

यदि मृत्यु हुई हो	तो श्राद्ध होगा
प्रतिपदा या द्वितिया को	१६-९-८९
तृतिया को	१७-९-८९
चतुर्थी को	१८-९-८९
पंचमी को	१९-९-८९
षष्ठी को	२०-९-८९
सप्तमी को	२१-९-८९
अष्टमी को	२२-९-८९
(या बालक डूब गया हो संभव हो कि मृत्यु हो गई हो और लाश न मिली हो तो उसका भी)	
नवमी	२३-९-८९
(माता का भी)	
दसमी को	२४-९-८९
एकादसी को	२५-९-८९
द्वादसी को	२६-९-८९
(यदि घर का कोई सदस्य सन्यासी हो गया हो तो उसका भी)	
त्रयोदसी को	२७-९-८९
चतुर्दशी को	२८-९-८९
(या जिसकी अकाल मृत्यु हुई हो)	
अमावस्या या पूर्णिमा को	२९-९-८९

(इसके अलावा परिवार के समस्त पूर्वजों का श्राद्ध भी इसी दिन किया जाता है)

रजि० नं० ३५३०५/८१

पोस्टल एल. आर. जे. ३६६७/८६-८७

विश्व में पहली बार

आप अपने घर में स्थापित करने जा रहे हैं

मंत्र निर्मित

सिद्ध वरदेश्वरी शक्तिपीठ

१०-९-८९ को

● यह सौभाग्य आपको ही मिल रहा है, कि शास्त्र युक्त "वरदेश्वरी दिवस" (१० सितम्बर ८९) को आप अपने घर में "सिद्ध वरदेश्वरी शक्तिपीठ" स्थापित करने जा रहे है, पूरा का पूरा शक्ति पीठ अपने घर में पूजा स्थान में—

सिद्धे वरदेश्वरी पीठे या गृहे शुचि संस्थिता।
देव तुल्यं व सिद्धिर्वै कुबेरो तुल्य नौ नरः॥

जो वरदेश्वरी दिवस पर अपने घर में "सिद्ध वरदेश्वरी शक्तिपीठ" की स्थापना करता हैं, वह देव तुल्य, सिद्धियों का स्वामी एवं कुबेर वत् धनी होता है।

आप क्या करें

कुछ नहीं, सब कुछ हम करेंगे आपके लिये। आप हमें लिख भेजें, कि आप इस महत्वपूर्ण दिन के लिये अपने घर में ऐसा दुर्लभ शक्तिपीठ स्थापित करना चाहते है, और उसी पत्र में पत्रिका हेतु तीन नये पत्रिका सदस्य बनाकर उसके नाम व पूरे पते लिख भेजिये, और साथ में मात्र तीस रुपयों का मनिआर्डर कर उसकी रसीद भेज दें, या बैंक ड्राफ्ट भेज दें।

हम भेज देगें

तीन पत्रिका सदस्यों के शुल्क में से तीस रुपये कम कर शेष रकम की वी.पी. से यह **"दुर्लभ-यंत्र"** आपको भेज देंगे, और उन तीनों को पूरे वर्ष के लिये पत्रिका सदस्य कर पत्रिका भेज देंगे।

इस प्रकार आपको तो यह महायंत्र सर्वथा मुफ्त में ही प्राप्त होगा।

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग हाईकोर्ट कोलोनी
जोधपुर- ३४२००१ (राज.)